भगवान् शंकर के मुख से यह कथा सुन, देवी परम प्रसन्न हुई। उन्हीं के द्वारा यह कथा हिमराज के घर पहुंची और वहाँ से इसका प्रचार पृथ्वी में हुआ।

(शिवपुराण)

महात्माओं के वचन।

मैं आकारों के समुद्र में इस आशा से गहरी डुबकी मारता हूं कि निराकार का पूर्ण मोती मेरे हाथ आ जाय।

मैं अपने जीवन भर अपने गीतों के द्वारा तुझे ढूंढता रहा हूं। अब मैं उत्सुक हूं कि मर कर अमरत्व में लीन हो जाऊं।

मैं तेरी कथाओं को अमर गीतों में प्रकट करता हूं और तेरा रहस्य मेरे हृदय से निकल पड़ता है।

मैं तुझे तेरी जीत की भेंटों और अपनी हार के हारों से अलंकृत करूंगा।

जीवन रूपी नौका की पतवार को जोड़ते समय मैं जानता हूं कि अब तू इसे अपने हाथ में ले लेगा।

नीलाकाश से एक आंख मेरी ओर देखेगी और इशारे से चुपचाप मुझे अपनी ओर बुलाएगी।

जब मैं यहाँ से विदा होऊं तब मेरे अन्तिम वचन यह हों, कि मैंने जो कुछ देखा है उस से बढ़ कर और कुछ नहीं हो सकता।

जब मा बच्चे को दाहने स्तन से छुड़ाती है तो वह चीखता है और दूसरे क्षण में ही जब वह उसे बांया स्तन देती है तब उसे आश्वासन होता है।

मुझे उस समय की कोई खबर नहीं जब मैंने पहले पहल इस जीवन में प्रवेश किया था।

जब प्रातः काल मैंने आकाश को देखा तो मुझे उसी क्षण मालूम हुआ कि मैं इस जगत् में कोई अपरिचित जन नहीं हूं और उस नाम रूप रहित अज्ञेय शक्ति ने मेरी मा का रूप धारण कर मुझे अपनी गोद ले लियाहै ऐ मेरे मित्रो! अब मेरे जाने की बेला है। तुम

सब मेरे लिये शुभ कामना करो। आकाश उषा से रक्तवर्ण हो रहा है और मेरा मार्ग सुहावना है। मैं अपनी यात्रा पर खाली हाथ और आशा पूर्ण हृदय के साथ जाता हूं।

मुझे छुट्टी मिल गयी है। ऐ मेरे भाइयो मुझे विदा करो मैं तुम सब को प्रणाम करता हूं। मेरा बुलावा आया है और मैं यात्रा के लिये तयार हूं।

मैं जो कुछ हूं, मेरे पास जो कुछ है, मैं जो कुछ आशा करता हूं, और मेरा प्रेम यह सब गम्भीर रीति से सदा तेरी ओर प्रवाहित होते रहे हैं। मेरे ऊपर तेरे नयनों का अन्तिम कटाक्ष पड़ते ही मेरा जीवन सदा के लिये तेरा होजायगा।

पुष्प पिरो लिये गये हैं, वरके लिये माला तयार है मृत्यु पश्चात्, वधु भक्त अपने घर से विदा होगी और अपने स्वामी से शून्य रात्रि में अकेली मिलेगी।

जब मृत्यु मेरे द्वार को खटखटायेगी तब अपने प्यारे अतिथि के आगे जीवन का भरपूर पात्र रख दूंगा। उसे खाली हाथ न जाने दूंगा।

प्रवीण शिल्पी अनेकों प्रतिमायें बनाते हैं। जब उनका समय आजाता है तब वे विस्मृति की पवित्र धारा में विसर्जन करदी जाती हैं।

वसन्त की मन्द २ वायु रह २ कर तेरे निर्जन भवन में उन फूलों के समाचार लाती है जो पूजा में अब तुझे नहीं चढ़ाये जाते।

मैं तेरे सन्ध्यागगन के सुनहरे शामयाने के नीचे खड़ा हूं। और अपने उत्सुक नयनों को तेरे मुखारविन्द की ओर उठाता हूं।

हाथ जोड़ कर अश्रु जल से मैं उसकी पूजा करूंगा और अपने हृदय के रत्न को उसके चरणों में अर्पण कर दूंगा।

हे प्रभु! तेरे हाथ में अनन्त समय है हमारे पास वृथा नाश करने के लिये तनिक भी समय नहीं है इस लिये हमें अपने अवसरों और सफलताओं के लिये छीना झपटी करनी चाहिये।

हम इतने दरिद्री हैं कि विलम्ब नहीं कर सकते। झगड़ा करने वालों के साथ झगड़ा करने में मेरा समय निकल जाता है। तेरी वेदी अन्त तक शून्य पड़ी रह जाती है। दिन समाप्त होने पर डरता हूं कि कहीं तेरा द्वार बन्द न हो जाय। पर ज्ञात होता है कि अभी समय बाकी है।

मेरे जीवन के प्रत्येक क्षण का नियन्ता तू है। सब के भीतर रह कर तू बीजों में अंकुर, कलियों में फूल और फूलों में फल उत्पन्न करता है।

जब मेरा घर विविध अलंकारों से सुसज्जित किया जाय उस में मैं यह अनुभव करता रहूं कि

मैंने तुझे अपने घर में निमन्त्रित नहीं किया है। एक क्षण भी न भूलूं और सोते जागते सदा ही इस शोक की वेदना मेरे मन में बनी रहे।

मैं शरद मेघ के उस बचे बचाये टुकड़े के समान हूं जो आकाश में व्यर्थ भटकता फिरता है। अपने स्पर्श से उसे पिघला कर अपने प्रकाश के साथ तन्मय करो तुझ से बिछुड़ा हुआ मैं महीनों और वर्षों घड़ियां गिन२ कर काट रहा हूं।

क्षण भंगुर जीवन को विविध वर्णों से रंग दे। सोने से सुनहरा करदे। चंचल वायु पर उसे छोड़ दे और विविध आश्चर्य जनक रूपों में उसे फैलने दे।

जब विधाता ने सृष्टि रचाना की तब नीलाकाश में सब तारे चमकते हुए निकल आये। देवता गीत गाने लगे आहा! कैसा शुद्धा नन्द है। अहा! कैसी पूर्ण छवि है। सहसा कोई बोल उठा अरे! ज्योतिमय ताल में एक स्थान खाली है। जान पड़ता है कि एक तारा खो गया। खोया हुवा तारा सब से श्रेष्ठ था उसी से आकाश मण्डल की शोभा थी। उस दिन से सारा जगत् उस तारे को ढूंढ रहा है।

हे प्रभु! हम को तूने जो कुछ दिया है वह हमारी सब अवश्यकताओं को पूरा करता है और फिर तेरे पास ज्योंका त्यों लौट जाता है।

जीवन की जो धारा मेरी नसोंमें रात दिन बहती है वही सारे विश्व में वेग से बहती है और ताल स्वर के साथ नृत्य कर रही है। आदि मरण अन्त अमर जीवन साधु का है।

बड़ाई शिर झुकने में है। प्रीतम के सिवाय किसीसे प्रीति न लगाने में बुद्धिमानी है। दीनता और आधीनता, गुरु में अटल विश्वास, अपने आप को पहचानना, भगवद्भक्ति करना, भगवत् मिलन की चिंता, सन्तोष, मेरा भजन बन्दगी मंजूर होगी या नहीं, निरन्तर स्मरण की लालसा, अपने को भूल जाना, प्रेमी प्रीतम बनजाना, संसारियों के संसर्ग से बचना, इत्यादि भगवान् कीकृपा के फल हैं।

कड़वी जुबान का मीठा जवाब देना, क्रोध में चुप साधना, चित्त कोमल रखना नम्रता के लक्षण हैं

तीन बात प्रशंसनीय हैं क्रोध में क्षमा, टोटे में उदारता और अधिकार में सहन।

तीन बात जितनी बढ़ावोगे बढ़ेंगी। भूख, नींद और डर।

तीन की महिमा तीन जानते हैं। जवानी की बूढ़े, आरोग्यता की रोगी, और धन की निर्धन।

तीन बातों से बचो सब तुम्हें पसन्द करेंगे। किसी से कुछ न मांगो, किसी को बुरा मत कहो, और किसी के महमान के बिना बुलाये पुट लग्गू न हो।

तीन के बिना तीन नहीं रहते। धन बिना वाणिज्य के, विद्या बिना शास्त्रार्थ के और राज बिना शासन के।

बूढ़ों का आदर करना, छोटों को सलाह देना, बुद्धिमानों से सलाह लेना, मूर्खों के साथ न उलझना।

चार तरह के आदमी होते हैं मक्खी चूस, कंजूस उदार और दाता। जो न आप खाय न दूसरे को दे वह मक्खी चूस, आप खाय पर दूसरे को न दे वह कंजूस, आप भी खाय और दूसरों को भी दे वह उदार और जो आप न खाय परन्तु दूसरों को दे वह दाता कहलाता है। यदि दाता नहीं बन सकते तो उदार तो अवश्य ही होना चाहिये।

संकट में मित्र की, रण में शूर की, ऋण में साहू की चोट में स्त्री की और रोग शोक में नाते दारों की पहचान होती है।

खुशी, रंज, रोजी, मौत यह चार अपने आप आती हैं।

चार जाकर फिर नहीं आती, छूटा हुआ तीर, मुंह से निकली बात, बीती हुई उमर और टूटा हुवा दिल।

जो आके न जाय वह बुढ़ापा देखा।
जो जाके न आय वह जवनी देखी॥

चार चीजें पहले निर्बल दीखती हैं और आगे जोर दिखलाती हैं। शत्रु, आग, रोग और ऋण।

पांच के संग सेव बना चाहिये झूठा, मूर्ख कन्जूस, डरपोक और दुष्ट।

एक पुरानी कहानी।

चतुर्थांङ्क से आगे।

गाड़ी में हंसते, भजन गाते दिल्ली पहुंचे। शहर में और ही नक्शा था। सब दुकाने बन्द थीं। हम सेठ नाथूराम, रघुरामप्रसाद की कोठी पर गए। यह आश्रम के खजानची हैं परन्तु यह भी असहयोगियों में थे। दरवाजे पर जमादार से भेंट हुई वह एक सरलात्मा ब्राह्मण था परन्तु हमारे इस कृत्य को वह भी

महात्माओं के वाक्य ।

हे मेरे ईश्वर ! मेरे जीवन के लबालब भरे पात्र से तू कौनसा दिव्य रस पान करना चाहता है ।

त्याग मेरे लिये मुक्ति नहीं है मुझे तो आनन्द के सहस्त्रों बंधनों में मुक्ति का रस आता है ।

आदमी जितना आप बिगाड़ करता है उतना दूसरे नहीं कर सकते । जो कुछ हम आप सीखते हैं उसका असर दूसरों की सीख से बढ़ कर है ।

उपदेश और अच्छी सलाह जहां से मिले आदर के साथ स्वीकार करो । देखो मोती सा अनमोल पदार्थ सीप जैसी तुच्छ वस्तु से निकलता है । जो अच्छी सलाह नहीं सुनता वह धिक्कार सुनेगा ।

अर्थ सिद्धि की दो कुंजियां हैं बुद्धि और आशा संयुक्त उद्योग । बिना इनके आदमी संसार में बढ़ नहीं सकता ।

किसी बात के निर्णय में जल्दी न करो पर जब समझ लिया तो दृढ़ संकल्प रहो करने के पहिले उस काम को हानि लाभ भांति भांति मन में तोल लो फिर उस को करो परिणाम चाहे जो हो ।

किसी काम में हाथ डालने के पहले अपने पुरुषार्थ को तोल लो बहुत ऊंचे चढ़ जाने से गिर जाने का डर और बहुत नीचे पड़े रहने से कुचल जाने का भय होता है ।

मालिक पर भरोसा करो पर ऊंट के पांव बान्ध कर रक्खो ।

जिसने किसी काम को पूरा करने का प्रण ठान लिया वह उस को अवश्य कर लेगा ।

कर्ता सब पशु पक्षियों को आहार देता है परन्तु उन की मांद में नहीं डाल आता ।

धन की मिठास उसको मिलेगी जिसने उसकी कमाई में मेहनत की कड़वाई को चक्खा है ।

किसी कठिन काम के करने में हिम्मत हार देना कायरता का लक्षण है । यदि उसे दूसरे कर सकते हैं तो तुम क्यों नहीं कमर कस कर तयार हो जाते ? कुल मालिक पर भरोसा अवश्य रक्खो जो सब उद्योग की जान है उस पर दृढ़ विश्वास रख कर आदमी

असम्भव काम कर सकता है। असम्भव का शब्द केवल मूर्खों के कोष में मिलता है।

स्वतन्त्र और अनाधीन वही कहा जा सकता है जो अपने काम के लिये दूसरे का आश्रित नहीं है।

एक से एक मिलकर ग्यारह होते हैं परन्तु अलग रहने से एक का एक ही बना रहता है। पर याद रक्खो 'एका' नाम अच्छे और नीति संयुक्त कार्यों के लिये मिलने का है। नीति विरुद्ध कार्यों लिये मिलने का नाम " गुट्ट है।

तैमूर लंग का कथन है कि यदि तुम प्रजा को अराम देना चाहते हो तो न्याय के खड्ग को अराम न लेने दो। न्यायमें कोमलता मिली रहने से वह सोना और सुगन्ध होजाता है।

हजरत ने फरमाया कि एक पल का न्याय हजार वर्षके भजन बन्दगी से बढ़ कर है। कथा है कि सुलतान मालिकशाह एक नदि के किनारे सैर को उतरे थे। उनका एक मुंह लगा गुलाम था। जिसने एक सुन्दर गाय को वहां चरते हुए देख कर जिबह करा डाला और लश्कर वालों के साथ बांट खाया। जिस बुढिया की वह गाय थी उसके चार बच्चे उसी के दूध से पलते थे। वह इस समाचार को सुन कर दुःख के मारे पागल सी होगई। और थोड़ी देर पीछे जब बादशाह घोड़े पर सवार होकर चले तो लपक कर बाग पकड़ ली। और विलाप के साथ अपनी विपत का हाल कह सुनाया। बादशाह को सुन कर दया आई। उस गुलाम को दण्ड दिया और बुढ़िया को एक गाय के बदले कई उस से अच्छी गायें और धन दिया। बुढ़िया ने आशीष दी कि जैसे तैंने इस लोक में मुझे न्याय से सन्तुष्ट किया है मालिक तुझे परलोक में दया से मालामाल करे! जब बादशाह मरा एक ने उसे अपने स्वप्न में देखा और पूछा कि अल्लाह से कैसी निबटी? जवाब दिय कि अगर उस रांड बुढ़िया की आशिष मेरी सहायक न होती तो नरक की आग से बचने के लिये कुछ आशा न थी।

एक राजा के राज में एक गरीब बुढ़िया रहती थी। उसके झोंपड़े के पास राजा ने अपना महल बनवाया। बुढ़िया के झोंपड़े का धूंवा महल में जाता था इसलिये राजा का हुकुम हुवा कि बुढ़िया अपना झोंपड़ा वहां से हटाले। सिपाइयों ने बहुत कुछ डांटा पर बुढ़िया वहीं पड़ी रही। अन्त में राजा के सामने लाई गई। राजा ने पूछा तू झोंपड़ा क्यों नहीं हटाती? बुढ़िया बोली महाराज मैं तो आपका इतना बड़ा महल और बाग देख सकती हूं परन्तु आपको मेरी एक टूटी फूटी झोंपड़ी खटकती है। मुझ निरपराधनि की झोंपड़ी यदि आप उजाड़ देंगे तो आप के न्याय पर कलंक लगेगा। राजा लज्जित हुवा और धन के सत्कार से उसको विदा किया।

उदर भक्त ने किसी गुलाम से जो बकरी

चराता था पूछा कि क्या तू एक बकरी मेरे हाथ बेचेगा । उसने जवाब दिया कि बकरियों का मालिक दूसरा है मुझे तो इनके चराने का काम सुपुर्द है । इस पर उमर बोले कि इन का मालिक यहां तो नहीं देखता है उससे कह देना कि एक बकरी को भेड़िया उठा ले गया तब चरवाहे ने उत्तर दिया कि जो बकरी का मालिक नहीं देखता तो घट घट व्यापी मालिक तो देखता है । यह सुन कर उमर रो पड़ा ।

भलों का संग करो । कुसंग से बचो । बड़ों की आज्ञा पालन करना मनुष्य का धर्म है । बड़ों से लड़ना अपना अपमान करना है । बड़ों की सीख संसार की कीच में न फंसने के लिये लाठी का काम देती है । समझदार को चाहिये की सदा बड़े का संग करे ।

जो कोई अपनी उन्नति या कीर्ति चाहता है उसको इन अवगुणों से बचना चाहिये । अधिक सोना, ऊँघना, डर, क्रोध, आलस्य और टालमटोल ।

राज भक्ति का भारी दर्जा धर्म शास्त्र और नीति दोनों में है । राजा या बादशाह के द्रोही का लोक परलोक दोनों बिगड़ता है । घमण्ड या अहंकार मूर्खता का चिन्ह है ।

दूसरे की निन्दा नहीं करना, अपनी प्रशंसा नहीं सुहाती, दूसरे की प्रशंसा से हर्ष होता है, दूसरों को सुख पहुंचाना, छोटों से कोमलता और दया भाव, बड़ों से आदर सत्कार के साथ बर्तना है तथा खेल में भी किसी के साथ जो चालाकी नहीं करता वह महापुरुष है ।

यूनान का फीसागोरस पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रखता था उसने कहा है कि मैं पहले जन्म में फौज का अफसर था और लड़ाई में मारा गया । उसके पता देने में एक कन्दिरा में जहां लड़ाई हुई थी उस के हथियार पड़े हुए मिले । इसीतरह अपने बहुत से चेलों के पिछले जन्मों का हाल बताया और लोगों को प्रत्यक्ष प्रमाण से निश्चय करा दिया ।

मौलाना रूम ने फरमाया है कि मैं कितने ही जन्म भोग चुका हूं ।

बुद्ध का उपदेशः- नोकरी बुद्धिमान् की करो । मूर्ख से बचो । सज्जनों के परोस में रहो । भली कामनाओं को मन में बसाओ और बुरी कामनाओं को निकालो । शान्त स्वभाव रहो । जब कोई दोष लगावे तो अपने मन को न बिगाड़ो । सम्पत्ति में फूल न जाओ और विपत्ति में भिचक न जाओ । दूसरे का माल बेईमानी से लेने या दबा बैठने की नियत न करो । जिनसे तुम्हारा जी नहीं मिलता उनसे दूर रहो । किसी को कथनी या करनी से धोखा न दो ।

पक्के धर्मी की बोली धीमी होती है क्योंकि जो अच्छे काम की कठिनता को जानता है वह अवश्य सम्भल कर बोलेगा ।

आदमी अपना दर्पण आप है । अपनी

आंख आप खोलो नहीं तो कब्र खोलेगा ।

झूठी खबर न उड़ाओ । बुरे से मेल न करो । तुम्हारे शत्रु का बिछरा हुआ बैल तुम्हें मिले तो उस के घर पहुंचादो । परदेशी को न सताओ । जब खेत काटो तो थोड़ा सा बटोही के लिये भी छोड़दो । अपने परोसी के साथ अत्याचार न करो । मजूर की मजूरी रात भर रोक न रक्खो । बहरे की ठठोली न उड़ाओ । अन्धे की राह में ठोकर खाने को ढेला न रक्खो । मुखबिरी न करो । चुगली न खाओ । अपने परोसी को बुरे काम करने से डाटो । किसी को छोटी निगाह से न देखो लग्न मुहूर्त का विचार मत करो ।

बूढ़ों का खड़े होकर सत्कार और सब प्रकार प्रतिष्ठा करो । धरती को बेच न डालो

प्रेम आकर्षण या खैंच शक्ति का नाम है जिस से यह सब रचना ठैरी हुई है और मालिक आप प्रेम स्वरूप है अपने से बढ़ कर किसी को चाहना प्रेम है । जो अपने से बढ़ कर मालिक को चाहता है उस को तन ,मन धन अपने प्रीतम पर वार देने में क्या शोच विचार होगा ।

प्यारे अगर तू न बोलेगा तो मैं अपने हृदय को मौन से भर लूंगा, मैं चुप चाप पड़ा रहूंगा और तारों से भरी हुई रात्री की तरह प्रतीक्षा करूंगा, तेरी वाणी की सुनहरी धारायें आकाश को चीर कर नीचे की ओर बहेंगी ।

लोग अपने विविध विधानों से मुझे जकड़ने के लिये आते हैं किन्तु मैं उन्हें टाल देता हूं क्योंकि मैं तो केवल प्रेम के कर कमलों में आत्म समर्पण करना चाहता हूं । मुझे आज नींद नहीं । रह रह कर मैं द्वार खोलता हूं और अंधेरे में बाहर की ओर देखता हूं मैं विस्मित हूं कि तेरा रास्ता किधर है । दुःख रूपी दूत तेरे द्वार को खटखटा रहा है । उस का संदेश है कि तेरा स्वामी जागता है और रात्रि के अन्धकार में वह तुझे प्रेमाभिसार के लिये बुला रहा है । वह ऐसे समय आया जब रात्रि का सन्नाटा था । वह मेरे इतने नज़दीक आता है कि जिस की श्वास मेरे शरीर में लगती है ।

मेरा छोटा सा हृदय उन के हाथों के अमृतमय स्पर्श से अपने आनन्द की सीमा को खो देता है और उस में ऐसे उद्गार उठते हैं कि जिन का वर्णन नहीं हो सकता ।

संसारी जनों का प्रेम मुझे सब तरह से बान्धने का यत्न करता है और मेरी स्वतंत्रता को छीन लेता है परन्तु तेरा प्रेम जो उन के प्रेम से बढ़ कर है निराला है वह मुझे दासता की शृंखला में नहीं बांधता किन्तु मुझे स्वतंत्र रखता है ।

और भोजन भी वह अपने मनके अनुकूल चाहते हैं। तपस्या से जी घबराता है और यदि पिता समझाने से मान भी जावे तो माता का कलेजा अधर होजाता है। वह अपने बालक को केवल एक लंगोटी बान्धे हुए नहीं देख सकती क्योंकि वह तपस्या के रहस्य को जानती ही नहीं। यदि हजारों मनुष्यों में कोई वीर और समझदार माता पिता अपने पुत्र को ब्रह्मचर्य की कठिन तपस्या के लिए देना भी चाहें तो रखने वाले ऐसे अगुआ नहीं मिलते कि जिन्होंने स्वयं तप करके अनुभव प्राप्त किया हो कि वर्तमान समय में ब्रह्मचर्य किस भान्ति पालन किया जासकता है। वह मनु के श्लोक और वेद के मंत्रों को जान कर ही ब्रह्मचर्य विज्ञान के आचार्य बने हुए हैं। इन सब बातों से ब्रह्मचर्य प्रणाली के पुनरोद्धार करने में घोर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा परन्तु यह नितान्त आवश्यक है। यदि हम ब्रह्मचर्य का पुनरोद्धार नहीं कर सकेंगे तो हमारी उन्नति असम्भव है। हमारा सबसे आवश्यक और पहला सुधार ब्रह्मचर्य है॥

महात्माओं के वाक्य।

मनुष्य को चाहिये क्रोध को प्रेम से जीते, बुराई को भलाई से, लालची को उदारता से और झूठे को सत्य से।

यदि कोई आदमी मोटा और पेटू हो जाता है और सोने वाला व चारपाई तर लेटने वाला बन जाता है तो वह मूर्ख उस शूकर की भान्ति होता है जो मैले पर गुजारा करता है और बार बार जन्म लेता है।

बुढ़ापे तक स्थिर रहने वाली भलाई सुखदाई है, दृढ़ता से पकड़ा हुआ विश्वास सुख प्रद है, ज्ञान का प्राप्त करना आनन्द दायक है और पापों से बचना सुखदाई है।

जो अनहुई बात को कहता है और जो हुई से इनकार करता है वह दोनों नरक गामी हैं।

तृष्णा से प्रेरित हुए मनुष्य बेड़ियों और बन्धनों से जकड़े हुए पाश में फंसे हुए पशु की भान्ति चिर काल तक बार २ दुःख उठाते रहते हैं।

जिस का मन संयम में है उस ही में शक्ति, शान्ति, प्रेम और बुद्धि है।

उस ही ने सम्पूर्ण जगत को जीता है जिस में पूर्ण शान्ति है।

पण्डित, चिन्ता, भय, शोक, मोह, निराश और घृणा इन सब से दूर रहता है।

बौद्ध-भिक्षुक-

१. आंख का निग्रह करना उत्तम है नासिका का निग्रह उत्तम है, कानोंका निग्रह अच्छा है, और जिह्वा का निग्रह उत्तम है।

२. शरीर का संयम अच्छा है, वाणी का

संयम उत्तम है, विचारोंका संयम उत्तम है इसी तरह प्रत्येक बात में संयम उत्तम है । जो भिक्षुक सब बातों में संयम कर लेता है वह सब दुखों से छूट जाता है ।

३ जो अपने हाथ को वस में रखता है, जो अपने पावों को वश में रखता है, जिसकी वाणी वश में है, जो अच्छी तरह वशवर्ती है जो, अन्तरात्मा में आनन्द मनाता है, जोसंयमी है, जो एकान्तवासी और सन्तोषी है उसे भिक्षुक कहते हैं ॥

४-भिक्षुक जो अपने मुख को वश में रखता है। जो बुद्धि मानी और शान्ति से भाषण करता है । जो अर्थ और आदेशकी की शिक्षा देता है। उसकी वाणी प्रिय है ॥

५-जो आदेश में निवास करता है, जो आदेश में आनन्द मनाता है, जो आदेश के अनुसार ध्यान करता है जो आदेश का अनुगामी है वह भिक्षुक सत्य आदेश से कभी नहीं गिरेगा ।

६-जो कुछ मिल जावे उसे तुच्छ न समझे, कभी दूसरों से ईर्षा न करे जो भिक्षुक औरों से ईर्षा करता है उसे शान्ति नहीं मिलती ।

७-उस भिक्षुक की प्राप्त पदार्थ को तुच्छ नहीं समझता चाहे उसे बहुत कम मिला हो देवता भी श्लाघा करते हैं, यदि उस का जीवन पवित्र है और वह आलसी नहीं है ।

८-जो अपनेको नाम व रूप से भिन्न समझता है वह मिथ्या पदार्थों के लिये शोक नहीं करता और वह निस्सन्देह भिक्षुक है ॥

९-वह भिक्षुक जो करुणा से काम करता है और बुद्ध के सिद्धान्त मानने में अचल है प्राकृतिक कामनाओं, और हर्षसे मुक्त हुआ शान्ति के स्थान (निर्वाण) को प्राप्तहो जावेगा

१०-अय भिक्षुक ! इस नौका को खाली करदे , खाली होने पर यह शीघ्र चलेगी , और राग व द्वेष को त्याग कर तू निर्वाण को प्राप्त हो जावेगा ॥

पांच को छिन्न भिन्न करदे , पांच को छोड़दे , पांच से ऊपर होजा। ऐ भिक्षुक ? जो इन पांच बेड़ियों से बच निकला है वह ही पार गया है ।

ऐ भिक्षुक ध्यान कर , और लापरवा मत बन । अपने विचार को ऐसे पदार्थ पर मन लगा जो तुझे सुख देता है, क्यों कि ऐसा न हो कि अपनी लापरवाई के कारण नर्क में तुझे अग्नि का गोला निगलना पड़े और उस अवसर पर जलते हुये तू चिल्ला, कर कहे कि यह दुःख है ।

बिना ज्ञान के ध्यान नहीं और बिना ध्यान के ज्ञान नहीं , वह जिस को ज्ञान व ध्यान दोनों हैं निर्वाण के निकट है ।

वह भिक्षुक जिस का शरीर, वाणी और मन शान्त है , और चित्त एकाग्र है,

और जिसने संसार के प्रलोभनों को छोड़ दिया है वह शान्त कहलाता है।

गोशाला।

आश्रम की गोशाला के बारे में मगनलाल भाई गान्धी ने जोकि महात्मा गान्धी जी के भतीजे और सत्याग्रह आश्रम के मैनेजर हैं नीचे लिखी सम्मति प्रगट की है।

मैं यहां देखा कि गौ का पालन नहीं किन्तु पूजा होती है। फूलों से पूजा करना यह पूजा का एक ढङ्ग है। उस में जड़ता भी हो सकती है। यह पूजा जो मैंने देखी सो चैतन्य मय है और गौशाला को गौमाता के पवित्र मन्दिर की तौर से स्वच्छ और पवित्र रखा जाता है। बत्सों को देख कर चित्त तृप्त होता है।

चातुर्थिक ज्वर !

अपामार्ग की पत्ती के चूर्ण में आधा गुड़ मिला दो २ रत्ती की वटिका बना बिना जल के बारी के दिन दो २ घण्टे पर देने से चौथियाज्वर दूर होता है।

(तिजारी व चौथियाज्वर)

गोदन्ती हरताल १ तोला १ सेर निम्ब की पत्ती के कल्क में रख कर दस सेर कण्डों के गजपुट में फूंक दे स्वांग शीतल होने पर भस्म निकाल कर उसमें से १ रत्ती भस्म शुद्ध स्फटिका २ मास को मलाई या मक्खन मिलाकर ज्वरसे पहिले खिलावे तो एक ही मात्रा में तिजारी और चौथिया ज्वर रुक जाता है।

अन्यच्च।

गोदन्ती हरताल की धूम रहित भस्म बना कर २-२ रत्ती शहद में मिलाकर तीन बार ज्वर आने के प्रथम देने से उसी दिन ज्वर रुक जाता है

तिजारी।

भांग और गुड़ को मिला कर १ गोली बना ज्वर से २ घण्टा पहिले देने से ज्वर रुक जाता है

सामातिसारहरप्रयोगः।

शुद्ध अफीम १ तोला जीरा भुना ८ तोले सौंठ ४ तो० हींग भुन २ तो० को पानी में पीस कर चने प्रमाण गोलीयां बना कर प्रत्येक दस्त के पीछे एक २ बटी दे २-३ मात्रा में लाभ होगा।

संग्रहणी नाशक योग।

ग्रहणी रोगी गौ के तक्र के साथ लोध का चूर्ण सदा पान करे, इससे कष्ट साध्य भी साध्य होजाता है।

हीरानन्द ब्रह्मचारी,

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी।

ज्ञानी बना भरम नहीं छूटा झूंठा ही वाद करे २
कहें गुरु शब्द आकाश बांस पर, श्रुति गगन चढ़े।
तन विराट जो बतरे तुलसी, सहज ही भव उतरे।

भजन ४

सन्त परम हित कारी जगत माहीं ॥ टेक ॥
प्रभु पद प्रगट करावत प्रीति,
भरम मिटावत भारी ॥ १ ॥
परम कृपाल सफल, जीवन पर,
हरि सम सब दुःख हारी ॥ २॥
त्रिगुण तीत फिरत बन त्यागी,
रीत जगत से न्यारी ॥ ३ ॥
ब्रह्मानन्द सन्तन की सोवत
मिलत हैं प्रगट मुरारी ॥ ४ ॥

भजन ७

मन तोहे किस विधि कर समझाऊं ॥टेक ॥
सोना होय तो सुहाग मगाऊं,
बंकनाल रस लाऊं ॥
ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊं,
पानी कर पिंघलाऊं ॥ १ ॥
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊं,
ऊपर जीन कसाऊं।
होय सवार तेरे पर बैठूं,
चाबुक देके चलाऊं॥ २ ॥
हाथी होय तो जंजीर पड़ाऊं,
चारों पैर बन्धाऊं।
होय महावत तेरे पर बैठूं,
अंकुश लेके चलाऊं ॥ ३ ॥
लोहा होय तो ऐरण मंगाऊं,
उपर धूवन धुवाऊं ॥
धूवन की घन घोर मचाऊं,
जन्तर तार खिचाऊं ॥ ४ ॥
ज्ञानी न हो तो ज्ञान सिखाऊं,
सत्य की राह चलाऊं।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
अमरापुर पहुंचाऊं।

महात्माओं के वाक्य।

जो इच्छाओं के दास हैं वह कामनाओं के प्रवाह के साथ इस तरह नीचे चले जाते हैं जिस तरह मकड़ी अपने बनाए हुए जाले के साथ। बुद्धिमान पुरुष अन्त में इसे काटकर संसार से विरक्त होजाते हैं और मोह को छोड़कर चिन्ता रहित हो जाते हैं॥

जो सामने है उसे छोड़ दो जो पीछे है उसे छोड दो और जो मध्य में है उसे भी छोड़ दो॥

बुद्धि मान पुरुष उस बेड़ी को दृढ नहीं कहते जो लोहे, लकड़ी और सन की बनी हुई हो। उनसे कठिन पाश स्त्री और बाल बच्चों के लिए आभूषण और रत्नों की चिन्ता है॥

मैंने सब जीत लिया है मैं सबकुछ जानता हूं मैं जीवन की प्रत्येक दशा में दुःख से मुक्त हूं मैं सर्व त्यागी हूं और तृष्णा का नाश करके स्वतंत्र हो गया हूं। स्वयं पढ़कर मैं किसे पढ़ाऊं। हमारा अस्तित्व हमारे विचारों का फल है, वह हमारे विचारों पर अवलम्बित है, और हमारे विचारों से ही इसकी सृष्टि है। यदि मनुष्य दुष्ट विचार से भाषण करता है, या कर्म करता है तो दुःख उसका पीछा करता है जैसे कि चक्र गाड़ी में जुड़े हुए बैल के पांव का अनुगामी होता है। यदि मनुष्य शुद्ध विचार से भाषण करता है तो सुख उसका इस तरह अनुवर्ती होता है कि जिस तरह उसकी छाया सदैव उसका साथ देता है।

जिस तरह वर्षा टूटे हुए छप्पर में घुस जाती है, उसी तरह मलीन हृदय में विषय प्रवेश कर जाते हैं ॥

जो हमारे जीवन जगत् का दाता है, वही हमारा पिता रक्षक भी है; वह महान् तेजस्वी एवं महान् शासक है।

अय परम प्यारे ! तुम जो अपने भक्तों उपासकों को परम सुख एवं परम शान्ति का दान किया करते हो; यह तुम्हारी अपनी ही सत्यता सच स्वरूपता है और तुम्हारी अपनी ही कृपा का परिणाम है ॥

गोशाला ।

सर्कार को तोपखाने के लिए बैलों की आवश्कता होती थी इस लिए उत्तम बैल प्राप्त करने के लिए उसने हिसार में एक सर्कारी गोशाला खोली थी। इस गोशाला के कारण ही इस प्रान्त में उत्तम सांड मिल जाता है। अब तोप खानेमें बैलो की आवश्कता नहीं रही है इस लिए यह गोशाला सैनिक विभाग ने छोड़ दिया है और सिविल में शामिल कर दी गई है। इसके प्रबन्धक मि० आर ब्रेमफोर्ड आश्रम की गोशाला देखने आए थे देख कर उनका चित्त बहुत प्रसन्न हुआ और उन्होंने आश्रम से दो गौ अपनी गोशाला के लिए भी लेनी चाहीं परन्तु उनको दी नहीं गई। गोशालाके बारे में उनकी सम्मति यह है—

मैंने आज अचानक आश्रम की गोशाला देखी। मैंने १८ गाएं देखीं जिनमें ६ निस्सन्देह उत्तम नसल की है और दस छोटे बच्चे हैं। सब गोधन की दशा बहुत उत्तम है और चारा खिलाने और रखने के स्थान का प्रबन्धसन्तोष जनक है। अच्छे डेरी फार्म के यहां अच्छे साधन मौजूद हैं। यहां पर जिस चीज की आवश्यकता है वह उत्तम सांड है इस समय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के से काम लिया जाता है जिसको मैंने नहीं देखा कहते हैं कि वह बीमार है। मुझे बताया गया है कि दूध की तोल लिखनी आरम्भ करदी गई है यदि दूधकी अभिलाषा है तो दूध की नित्यप्रति तोल परमावश्यक काम है। यदि दूध का हिसाब रक्खा गया और उत्तम गायों की बछड़िया सावधानी से पाली गई तो शीघ्र ही उत्तम डेयरी बन जावेगी ॥

हरि का केवल नाम जप कर जो अपने कर्तव्य कर्म्म की इति श्री करते हैं, वे इस बात को मान रखें कि वे नाम–जाप के कारण हरि के प्रेमी भक्त नहीं हो सकते; उलटे वे पापी और हरि के शत्रु हैं।

उक्त वचनों से यह बहुत स्पष्ट है कि जिन लोगों पर श्रीकृष्णने गो–वंश के भरण–पोषण का प्रबन्ध रक्खा है। वे लोग जब तक गो–वंश की रक्षा का यथेष्ट प्रबन्ध नहीं करेंगे, तब तक उनकी अन्यान्य भक्ति-भावना-द्योतक सब चेष्टाएं व्यर्थ और निष्फल हैं। इसमें विन्दु भर भी शंका नहीं है।

गोपाष्टमी के दिन अथवा नित्य चन्दन अक्षत, रोरी और पुष्पमाला से गौ की पूजा करना उसकी सच्ची भक्ति नहीं हैं। उसकी सच्ची भक्ति यही है कि वह गवायुर्वेद की विधि से परिपालित की जाय। इस समय भारत की गो-भक्त जनता में गो–परिपालन की विधि का सर्वथा लोप हो गया है। गो–साहित्य के प्रचार द्वारा शिक्षा–प्रेमी जनता में गो–परिपालन की विधि का पुनः प्रचार कर तदनुसार परिपालन करना ही सच्ची गो–भक्ति है। सच्ची गो–भक्ति से ही गो–लोक का प्रवेश पत्र मिल सकता है।

आशा है कि 'भक्ति' के गो–भक्त पाठक इस लेख को पढ़कर गो–साहित्य का सदादर्श अवश्य ही खोलेंगे।

महात्माओं के वाक्य

वही लोग मुक्त हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओं को जीत लिया है बाकी लोग देखने में स्वतंत्र मालूम होते हैं मगर वास्तव में वह बन्धन से जकड़े हुए हैं।

फिजूल खर्च करने वाले के पास जैसे धन नहीं ठहरता ठीक इसी तरह मांस खाने वाले के हृदय में दया नहीं रहती।

जिसे उचित अनुचित का विचार है, वही वास्तव में जीवित है पर, जो योग्य-अयोग्य का खयाल नहीं रखता उसकी गिनती मुर्दों में की जायगी।

यदि किसी को अपने से प्रेम तो है उसको पाप की ओर जरा भी न झुकना चाहिए।

लालच द्वारा एकत्रित किए हुए धन की कामना मत करो क्योंकि भोगने के समय उस का फल तीखा होगा।

झूठ और निन्दा के द्वारा जीवन व्यतीत करने से तो फौरन ही मर जाना उत्तम है, क्योंकि इस तरह मर जाने से नेकी का फल मिलता है।

जो लोग अपने मित्रों के दोषों की खुले आम चर्चा करते हैं, वह अपने दुश्मनों के दोषों को भला किस तरह छोड़ेंगे ?

संसार-त्यागी पुरुषों से भी बढ़ कर सन्त वह है जो अपनी निन्दा करने वालों की कटु-वाणी को सहन कर लेता है।

वेद भी अगर विस्मृत हो जांय तो फिर याद कर लिए जा सकते हैं, मगर सदाचार से यदि एक बार भी मनुष्य गिर जाय तो, सदा के लिए अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाता है।

यदि कोई आदमी मूर्ख और अज्ञानी है तो केवल मौन व्रत धारण करने से मुनी नहीं हो जाता, बल्कि वह बुद्धिमान् आदमी जो भलाई और बुराई की तुलना करके भलाई को ग्रहण करता है मुनी है।

काम के समस्त वन को काट डालो, काम के वन से भय उपस्थित रहता है। जब तुम वन को और उस के छोटे पौदों को काट डालोगे तो तुम वन से दूर जाओगे और मुक्त हो जाओगे।

संसार को छोड़ कर तपस्वी हो जाना कठिन है, संसार को भोगना भी कठिन है, आश्रम का जीवन भी कठिन है, घर दुःखदाई है। बराबर वालों के साथ रहना भी दुःखद है, दुःख सहित भ्रमण शील भिक्षुक ही सब से श्रेष्ठ है।

यदि मनुष्य पर दोष दृष्टि रखता है और स्वयं सदा अपराध करने की वृत्ति रखता है तो उसके विकार बढ़ेंगे और वह मनः विकारों के दमन करने से बहुत दूर है।

भूसुरों का कर्मक्षेत्र में स्वागत।

ऋषिवंशजो तुम्हारा, स्वागत है आओ आओ।
भूदेव दिव्यता फिर; द्विजकुलमें लाओ लाओ।

आशाएं धर रही है तुमपर ही देश माता।
सन्मान पूर्वजों का, फिर पूर्ववत् बढ़ाओ ॥२॥

जग पूज्य बनके अब, क्यों अपमान सह रहे हो?
विप्रो! स्ववंशको फिर, गौरव शिखर चढ़ाओ।

जगको प्रकाशमें ला, क्यों लीन हो तिमिरमें?
हे ज्ञान सूर्य्य जगका, अज्ञानतम नशाओ ।४॥

द्विज कुलकी दुर्दशा लख; संताप हो रहा है।
तप तेज पूर्ण प्रतिभा; जग शिक्षको! दिखाओ।

सोचो तो भूसुरों जब; ये शिर गिरेंगे नीचे।
तब पैर क्यों न ऊंचे, होंगे तुम्हीं बताओ?"

गिरने से ही तुम्हारे; भारत गिरा हुआ है।
आसीन हो स्वपदपर, संघर्षको मिटाओ ॥७॥

हो धर्म धनसे रीता; भारत चला रसातल।
हे धर्म प्राण जीवन; फिर धर्मको जगाओ ।८।

उन्नति के उच्च पदपर, कैसे हों अग्रसर हम।
सदुपाय भूसुरो! वह; सत्वर हमें सुझाओ ॥

उन्नतिका मूल कारण; जातीय संगठन है।
द्विजकुलको संगठित करके; गौरव अतीत पाओ।

(भारतमित्र)

एक अचेम्भा यह सुना कि मांस मनुज को खाय ॥
(पतंग)

लाल केश मुर्गा नहीं सज्जन रंग नहीं मोर ।
बड़ी पूंछ बन्दर नहीं चार पांव नहीं ढोर ॥
(गिरगट)

चक्रपती राजा नहीं दण्ड धरै यम नाम ।
मन चाही सृष्टि रचै विधना ह न कहाय ॥
(कुम्हार)

इक उपजत है खेत में तन मन भरो स्नेह ।
इक सोहे गौर गात शीघ्र बता यह देह ॥
(तिल)

इक नारी करतार बनाई,
ना वह क्वारी ना वह ब्याही ।
लाल रंग सदा ही रहै,
भाभी २ सब जग कहै ॥
(बीरबहुटी)

महात्माओं के वाक्य ।

१. महान् पुरुष जो उपकार करते हैं, उस का बदला नहीं चाहते । भला संसार जल बरसाने वाले बादलों का बदला किस तरह चुका सकता है ?

२. योग्य पुरुष अपने हाथों से मेहनत करके जो धन जमा करते हैं, वह सब दूसरों ही के लिए होता है ।

३. हार्दिक उपकार से बढ़कर न तो कोई चीज़ इस संसार में ही मिल सकती है और न स्वर्ग में ।

४. जिसे उचित अनुचित का विचार है, वही वास्तव में जीवित है पर, जो योग्य अयोग्य का ख्याल नहीं रखता उस की गिनती मुर्दों में की जायगी ।

५. लबालब भरे हुये गांव के तालाब को देखो जो मनुष्य सृष्टि से प्रेम करता है उसकी सम्पत्ति उसी तालाब के समान है ।

६. दिलदार आदमी का वैभव गांव के बीचों बीच उगे हुए और फलों से लदे हुए वृक्ष के समान है ।

७. गरीब को देना ही दान है, और सब तरह का देना उधार देने के समान है ।

८. दान लेना बुरा है चाहे उससे स्वर्ग क्यों न मिलता हो । और दान देने वाले के लिए चाहे स्वर्ग का द्वार ही क्यों न बन्द हो जाय, फिर भी दान देना धर्म है ।

९. हमारे पास नहीं है ऐसा कहे बिना दान देने वाला पुरुष ही केवल कुलीन होता है

१०. याचक के होंठों पर सन्तोष जनित हंसी की रेखा देखे बिना दानी का दिल खुश नहीं होता ।

११. आत्मजयी की विजयों में से सर्व श्रेष्ठ जय है भूख को जय करना । मगर उस विजय से भी बढ़ कर उस मनुष्य की जय है जो भूख को शान्त करता है ।

चकनाचूर कर देते हैं। यह महान शक्ति अपने स्वाभाविक गुण से हमको अपनी तरफ खैंच रही है। परन्तु हमारा वहां तक पहुंचना उन फाटिकोंने बन्दकर रक्खा है। यह फाटक कौन २ से हैं यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, जो एक दूसरे से ज्यादा मज़बूत और दृढ हैं। जब हम दुनियां के आनन्द न पाकर परम शान्ति की तरफ चलते हैं तो हमारा मुकाबला इन फाटकों से होता है। इन फाटकों को तोड़ डालने के लिये सहायता करने में परमात्मा सद्गुरु रूप में आकर हमको उन फाटिकों के तोड़ने का रास्ता बतलाते हैं, और हमको उस महान शक्ति तक पहुंचने में सहारा देते हैं और हमारे और उस महान शक्ति के बीच में जो रुकावट पड़ी हुई है उसको रगड़ २ कर रास्ता साफ कर देते हैं। हमको इस रगड़ा रगड़ी में कुछ दुःख अवश्य प्रतीत होता है परन्तु यह दुःख ज्यादा दिन नहीं ठहरता यदि हमको उस महान शक्ति से मिलना है तो उसके लिये हमें भगवान की अनन्य भक्ति करनी पड़ेगी जिस से हम समस्त संसार को उसी का रूप समझने लगेंगे। अनन्य भक्त को लौकिक और पारलौकिक पदार्थोंसे मुंह मोड़ केवल भगवान को ही पाना होगा। जिन्होंने उस महान शक्ति तक पहुंचने की अपनी योग्यता प्राप्त करली है उसके सामने लोक और परलोक के दिल लुभाने वाले पदार्थों का मूल्य नहीं रहता, या यों कहो कि लोक और परलोक के समस्त पदार्थ उसकी आज्ञा पालन करने के लिये हरवक्त खड़े रहते हैं। इंजील में लिखा है कि जब लोग मर कर परमात्मा के पास पहुंचेंगे तो परमात्मा पूछेगा कि मैं भूखा था तूने मुझे कुछ नहीं खिलाया, मैं प्यासा था मैं तेरे द्वार पर आया परन्तु तैंने पानी नहीं पिलाया, मैं घायल था तेरे पास आया तैंने मेरी मरहम पट्टी नहींकी, मैं नंगा था मैंने कपड़ा मांगा परन्तु तैंने नहीं दिया। तब मनुष्य उसके उत्तर में कहेगा भगवन् क्या आप भी भूखे रह सकते हैं, प्यासे रह कमाते हैं, घायल हो सकते हैं, नंगे रह सकते हैं तो भगवान कहेंगे कि, जाओ तुम्हारे लिये मेरे पास जगह नहीं है तुमने मुझे नहीं पहिचाना।

मुसलमानों का मज़हब कहता है कि, मनुष्य को भगवान ने केवल दर्द दिल के लिये बनाया है। एक जगह यह भी कहा है कि:-

दिल बदस्त आवरकि हज्जे अकबरस्त।
अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतरस्त॥

इसका अर्थ यह है कि, मनको वशमें कर कि यहबड़ा भारी तीर्थ है हज़ारों तीर्थोंकी अपेक्षा मनको वशमें कर लेना अच्छा है।

अब हमारे सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित होता है कि, मनुष्य के लिये कौनसा कर्म आचरणीय है। इसका उत्तर हम भक्ति के अगले किसी अंक में देने प्रयत्न करेंगे।

अपूर्ण

महात्माओं के वाक्य।

मैं चुपचाप पड़ा रहूंगा और तारोंसे भरी और धीरता से अपना शिर झुकाये हुये रात्रि की भांति प्रतीक्षा करूंगा।

निःसन्देह प्रभातका आगमन होगा और अन्धकार का नाश होगा और तेरी वाणीकी सुनहरी धारायें आकाश को चीर कर नीचे की ओर बहेंगी।

तब मेरे पक्षियों से प्रत्येक घोंसले से तेरे शब्द गीतों के रूपमें उड़ेंगे और मेरी समस्त वन वाटिकाओं में तेरे सुर फूलों के रूप में खिल उठेंगे।

वही तो मेरा अन्तरात्मा है जो मेरे जीवात्मा को अपने गम्भीर अदृश्य स्पर्शों से जागृत करता है।

यह वही है जो इन नेत्रों पर अपना जादू करता है और मेरे हृदय रूपी वीणा के तन्तुओं पर सुख दुःख के विविध सुरोंको आनन्द से बजाता है।

यह वही है जो इस माया के जाल को सुनहले और रुपहले हरे और नीले अनेक रंगों में बुनता है और उन जालों में से अपने चरणों को बाहर निकलने देता है जिनके स्पर्श मात्र से मैं अपने आपको भूल जाताहूं।

दिन आते हैं और युगके युग बीतते जाते हैं यह केवल वही है जो मेरे हृदय को नाना नामों नाना रूपों और हर्ष शोक के नाना उद्वेगों में घुमाता है।

त्याग मेरे लिये मुक्ति नहीं है। मुझेतो आनन्द के सहस्रों बन्धनों में मुक्ति का रस आता है।

तू मेरे लिये सदा नाना रंगों और गन्धों के अमृत की वर्षा किया करता है और मेरे इस मिट्टी के पात्र को लबा लब भर देता है। मेरा संसार अपने सैंकड़ो दीपों को तेरी ज्योति से प्रज्वलित करेगा और तेरे मन्दिर की वेदी पर उन्हें चढ़ायेगा।

नहीं मैं अपनी इन्द्रियों के द्वार कभी बन्द न करूंगा। शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध का सुख तेरे परमानन्द को उत्पन्न करेगा।

हां, मेरे सब भ्रम और संशय तेरे आनन्द की ज्योतिमें भस्म हो जायेंगे, और मेरी सब वासनायें प्रेम रूपी फलों में परिणत हो जांयगी।

हे प्रभु! हम जीवोंको कुछ दिया है वह हमारी सब आवश्यकताओं को पूरा करता है, और फिर तेरे पास ज्यों का त्यों लौट जाता है।

नदी अपना नित्य का काम करती है और खेतों बस्तियों में होकर वेग से बहती चली जाती है। तथापि उसकी निरन्तर धारा तेरे चरणों की ओर प्रक्षालन के लिये घूम जाती है।

फूल अपने सौरभ से वायु को सुगन्धित करते हैं तथापि उनकी अन्तिम सेवा यही है कि अपने को तेरे चरणों में अर्पण करें।

तेरी इस पूजा से संसार कुछ दरिद्री नहीं होता कवि के शब्दों का अर्थ लोग अपनी रुचि के अनुसार लगाते हैं किन्तु उनके वास्तविक अर्थ का लक्ष तूही है॥

हे मेरे जीवन स्वामी! क्या दिन प्रति दिन मैं तेरे सम्मुख खड़ा रहूंगा? हे भुवनेश्वर! क्या कर जोड़ कर मैं तेरे सन्मुख खड़ा रहूंगा?

क्या तेरे महान आकाशके नीचे निर्जन नीरव अवस्था में नम्र हृदय से मैं तेरे सन्मुख खड़ा रहूंगा?

क्या तेरे इस कर्म प्रान्त संसारमें जो परिश्रम और संग्राम के कोलाहल से आकुल है, दौड़ धूप में लगे हुये लोगों के बीच में रहते हुये मैं तेरे सन्मुख खड़ा रहूंगा?

हे राजाधिराज! जब इस संसार में मेरा कार्य समाप्त हो जायगा तो क्या मैं एकान्त और नीरव दशा में तेरे सन्मुख खड़ा रहूंगा?

मैं तुझे अपना ईश्वर मानता हूं और इसलिये

तुझसे दूर खड़ा रहता हूं मैं तुझे अपना नहीं समझता और इसलिये तेरे निकटतर आने का साहस नहीं करता। मैं तुझे अपना पिता मानता हूं और तेरे चरणों में प्रणाम करताहूं, किन्तु मैं तुझे अपना मित्र नहीं समझता और इसलिये तेरा हाथ नहीं पकड़ता।

जहां तू नीचे उतर कर आता है और अपने आपको मेरा बतलाता है वहां तुझे अपने हृदय से लगाने और अपना साथी मानने के लिये मैं खड़ा नहीं होता।

भाइयो! मैं केवल तुम्हीं को अपना भाई समझताहूं। मैं उनकी पर्वाह नहीं करता मैं अपनी कमाई में उनको सम्मिलित नहीं करता और इस प्रकार तुझे भी अपने सर्वस्वमें हिस्सा नहीं देता।

मैं सुख दुःख में उनका साथ नहीं देता और इस प्रकार तेरे पास भी नहीं खड़ा होता। मैं दूसरों के लिये अपना जीवन देने से हिचकिचाता हूं और इस प्रकार जीवन महासागर में गोता नहीं लगाता।

हमारे पास वृथा नाश करनेके लिये तनिकभी समय नहीं है और इसलिये हमें अपने अवसरों और सफलताओं के लिये छीना झपटी करनी चाहिये। हम इतने दरिद्री हैं कि विलम्ब नहीं कर सकते।

पर झगड़ा करने वालों के साथ झगड़ा करने में ही मेरा समय निकल जाता है और इसलिये तेरी वेदी अन्त तक बिलकुल सूनी पड़ी रह जाती हैं। दिन समाप्त होने पर मैं यह डरता हुआ झपटता हूं कि कहीं तेरा द्वार बन्द न होजाय पर मुझे मालुम होता है कि अभी समय बाकी है।

जब जीव तुझे जान जाता है, तब उसके लिये कोई बेगाना नहीं रहता, तब उसके लिये सब द्वार खुलजाते हैं। हेप्रभु! मुझे यह वर दो कि मैं अनेकत्व के बीच में एकत्व के अनुभवानन्द से कभी वंचित न रहूं।

मानवधर्म सार।

तृतीयोऽध्यायः॥

वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि यथाक्रमम्।
अविप्लुत ब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत्॥१॥

अस्खलित ब्रह्मचर्य्य के साथ यथाक्रम तीनों वेदों को, वा दो वेदों को वा एक ही वेद को पढकर गृहस्थआश्रम में प्रवेश करे॥ १॥

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्तेसर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥

जहां स्त्रियों का मान होता है, वहां देवता आनन्द मानते हैं, और जहां इनका मान नहीं होता है वहां सब कर्म निष्फल जाते हैं॥ २॥

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु तत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा॥३॥

जहां कुलीन स्त्रियें शोक में रहती हैं, वह कुल जल्दी नष्ट होता है, और जहां यह शोक नहीं करती हैं, वह सदा बढ़ता है॥ ३॥

जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः॥४॥

अनादर पाई स्त्रियें जिन घरों को शाप देती हैं, वह जादू से नष्ट हुए की तरह बिलकुल नष्ट होजाते हैं॥ ४॥

तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः।

सत्योपदेश।

हे सच्चिदानंद स्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्व हृदयान्तरगत, सर्व व्यापक प्रभो! यदि मैं तुझको यहां आत्मा में नहीं पासका तो किस जगह पा सकूंगा।

सृष्टि के सकल पदार्थ एक विशेष आदर्श की ओर जाते हुवे दीखते हैं।

मनुष्य जीवन के प्रति विभाग में हम को प्रतीत होता है कि हरएक क्रिया किसी विशेष आदर्श की ओर है।

जड़ पदार्थ ऐसी क्रिया नहीं कर सकते अतः हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि यह सकल पदार्थ किसी चैतन्य अधिष्ठात्री शक्ति की आज्ञानुसार विचरते हैं।

ब्रह्माण्ड के सकल पदार्थ उच्च स्वर से पुकार रहे हैं कि परमात्मा विद्यमान है।

संसार की सुन्दर वस्तुएं एक विशेष सौन्दर्य की सत्ता की साक्षी हैं।

प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है।

हरेक पवित्रता उस पवित्रता के स्रोत को दर्शाती है।

जो अन्य पदार्थों के सौंदर्य और उत्तमता का स्रोत है उसी को परमात्मा कहते हैं।

ईश्वर परिपूर्ण है वह अनन्त है, वह ज्ञान स्वरूप है। उस का ज्ञान अनुमान नहीं बरञ्च प्रत्यक्ष है।

ज्ञान के अतिरिक्त उस में कृति भी है।

इस कृति के कारण वह अपनी भलाई को दूसरों तक पहुंचता है और मनुष्यों को अपने स्वरूप में गढ़ता है।

भगवान में ज्ञान और कृति ही नहीं बरञ्च प्रेम भी है। प्रेमकी तुलना इसीसे हो सकती है कि प्रेम के विषय में कितनी नेकी है।

वह प्रेम स्वरूप है।

जो कुछ हम अनुभव करते हैं जो कुछ हमारे दृष्टि गोचर होता है वह इसी ईश्वर का विकाश है जो आप छिपा हुवा है।

सारे पदार्थ भगवान के शब्द हैं और बोलते हैं।

प्रत्येक वस्तु ईश्वर से परिपूर्ण है।

जब कभी हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उस के आभ्यन्तर वास करने वाले भगवान के कारण से करते हैं।

प्यासा पुरुष जल की अभिलाषा इस लिये करता है कि जल में भगवान् निवास करते हैं।

मनुष्य को बड़े से बड़ा आनन्द भले कामों के चिन्तन से होता है

भगवान केवल उन से प्यार करता है जो अन्याय से घृणा करते हैं।

मूर्ख एक ही अध्यापक से सीखते हैं और वह है विपत्ति।

वह पुरुष जिस से सारे डरते हैं सब से डरता है।

मेरे लिये कर्तव्य वह है जो मुझे भाता है।

एक काम का करना ही पर्याप्त नहीं परन्तु आवश्यक है कि हम इसे सोच विचार कर करें।

सदाचारी जीवन में सब से बड़ा धर्म यह है कि मनुष्य अपने आपे को जाने।

सच्ची तपस्या इन्द्रिय संयम और दम है।

हमारे अन्दर देवासुर संग्राम होरहा है। असुर प्रत्येक की अवस्था में विशेष दुर्लभ अंश को ढूंढने

हैं और उस पर प्रहार करते हैं।

एक पुरुष की अवस्था में यह अंश काम दूसरे की अवस्था में क्रोध और तीसरे की अवस्था में कोई और अंश होता है।

जो मनुष्य अपने आप को नहीं जानता वह अपने दुर्बल अंश को भी नहीं जानता और इन्द्रियों को वश में रखने के अयोग्य है।

मनुष्य का सारा जीवन चेष्टा का प्रकाश है।

जब कभी हम चेष्टा करते हैं तो किसी त्रुटि को दूर करने के लिए करते हैं।

त्रुटि दुःखों का मूल है।

जब एक न्यूनता दूर होती है तो स्वाभाविक एक नई न्यूनता उत्पन्न हो जाती है।

विषयों की तृप्ति से अपने आप को शान्त करना ऐसा ही सम्भव है जैसा घृत से छींटों से अग्नि को बुझाना।

निर्वाण जीवन का आदर्श है।

जीवन का उद्देश्य जीवन दीर्घ करना नहीं वरंच जीवन के बन्धन से मुक्त होना है।

जगत् में सुख से दुःख अधिक है और ज्यों २ समय व्यतीत होता जाता है दुःख बढ़ता जाता है।

यदि हम कब्रों को ठोकर लगावें और मुर्दों से पूछें कि वह जीवित होना चाहते हैं या नहीं तो वह शिर हिला देंगे।

तुम इस प्रकार काम करो कि अपने काम के नियमको सर्वगत नियम बनाने की चेष्टा कर सको।

हमारे कामों का उद्देश्य किसी और उद्देश्य का साधन होने के स्थान में स्वयं साध्य होना चाहिए।

इस तरह काम करो कि मनुष्यत्व तुम्हारी अपनी अवस्था में या किसी और की अवस्था में साधन की न्याईं बर्ताव में न लाया जाय वरंच अंतिम उद्देश्य समझा जाय।

जो कुछ संसारमें होता है वह भावीके आधीन है। ऐसी अवस्था में हम क्यों चिंता करें।

अडोल चित्त होना, सिर आई को शांति से सहना, भगवान के साथ प्रेम करना यही जीवन का मुख्योद्देश है।

ईश्वर की उपासना जन्म और प्रकृति की उपासना मृत्यु है।

विद्या जीवन और अविद्या मृत्यु है।
सत्य जीवन और मूठ मृत्यु है।
धर्म जीवन और अधर्म मृत्यु है।
परोपकार जीवन और स्वार्थ मृत्यु है।
पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मृत्यु है।
ब्रह्मचर्य्य जीवन और व्यभिचार मृत्यु है।
सादापन जीवन और सजावट मृत्यु है।
एकता जीवन और विरोध मृत्यु है।
मित्रता जीवन और शत्रुता मृत्यु है।
वीरता जीवन और कायरता मृत्यु है।
सत्संग जीवन और कुसंग मृत्यु है।
संतोष जीवन और लोभ मृत्यु है।
अहिंसा जीवन और हिंसा मृत्यु है।
कृतज्ञता जीवन कृतघ्नता मृत्यु है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता है और मौत से डरता है, इस कारण उपरोक्त मौत के साधनों से घृणा करनी उचित है।

एक परमात्मा को सर्वोपरि इष्ट देव मानना, उसी की पूजा करना, सम्पूर्ण कर्म और जीवन का आधार समझना, उस के पवित्र नाम का गुप्त जप

करना और उस पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये।

ईश्वर, जीव और माया शांत अनादि हैं और ब्रह्म अनंत अनादि है।

मुक्ति अनन्त और अपार है। त्रिविध दुःख की अत्यन्त निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति रूप है।

कर्मों के अनुसार उन्नति पूर्वक शुभाशुभ जन्म मानना चाहिये।

अवतार, मूर्तिपूजा, तीर्थ, श्राद्ध आदि पुरानी बातों को जो बुद्धि के अनुकूल हों मानना चाहिये।

वेद शास्त्र आदि सर्व प्रमाण ग्रन्थों की अच्छी बातें को जो बुद्धि के अनुकूल हों मानना चाहिये।

सर्व विद्या और समस्त पुस्तकों के पढ़ने में मनुष्य मात्र का अधिकार होना चाहिये।

एक मनुष्य जाति है और जैसा करता है वैसा बनता है जन्म से कोई अच्छा बुरा नहीं होता। इस में जाति पांति ऊंच नीच का कोई भेद न होना चाहिये।

अध्यात्म विद्या में गीता उपनिषद् का नित्य पाठ करना चाहिये।

आलस्य छोड़ कर आजन्म विद्याध्यन करना चाहिये।

सब काम समय पर करने चाहियें।

बारंबार संध्या करनी चाहिए।

ईश्वर को और मौत को याद रखना चाहिए।

भगवान के दर्शन करने के लिए योगाभ्यास करना चाहिए।

देश, नरेश, महेश की भक्ति करनी चाहिए।

सब मतों को, उनकी पुस्तकों को, उनके अवतार तथा पीर पैगम्बरों को और अन्य देशोंके मनुष्यों को समान दृष्टि से देखना चाहिए। सबको अपना आपा समझना चाहिए। और परस्पर का भेद झूठा समझना चाहिए।

प्यारा, हितकर, सच्चा और मधुर भाषण करना चाहिए।

अपने घर में आये हुवे अतिथि का यथायोग्य पूजन करना चाहिए।

आपति आने पर आनन्द में मग्न रहना चाहिए।

अपने साथ में की हुई दूसरे की बुराई को और दूसरे के साथ में किये हुवे अपने गुण को भूल जाना चाहिए।

सम्पूर्ण कर्मों का फल परमात्मा को अर्पण करना चाहिए।

प्रारब्ध से पुरुषार्थ को बड़ा समझना चाहिए।

बलवान की अपेक्षा निर्बलों को विशेष सुभीता देना चाहिए।

मन वाणी और कर्म से सबको सुख पहुँचाना चाहिए।

गौ रक्षा के लिये उत्तम नसल उत्पन्न करके सुधार बनाना चाहिये और गोचर भूमि छुड़वाना चाहिये।

विषयों के आधीन न होना चाहिये। अधिक उपाधि नहीं बढ़ानी चाहिये। सारासार का विचार करते रहना चाहिये। साधु सज्जनों के सतसंग में जाना चाहिये। अधिक संतान न बढ़ानी चाहिये।

जैसे अपने लिये चाहे वैसे दूसरे के लिये करना चाहिये।

हर एक काम सब की भलाई के लिये पवित्र आकांक्षा से करना चाहिये।

दूसरों की बड़ाई सुन कर प्रसन्न होना चाहिये

पड़ोसी का मान आदर करना चाहिये ।

स्नान पान प्रेम और शुद्धताई के साथ मनुष्य मात्र का कर लेना चाहिये ।

दो बार हांडी का और एक बार चूल्हे का पका खाना चाहिये ।

मीठा भोजन दूसरे को खिला कर खाना चाहिये ।

मोटा खाना और मोटा पहरना चाहिये ।

बहुत भूख लगे तब खाना चाहिये और बहुत नींद आवे तब सोना चाहिये ।

सात्विक पदार्थ जो बुद्धि इत्यादि को बढ़ावें भोजन करने चाहियें ।

विवाह स्वयंवर की रीति से जाति पांति के विचार बिना लड़का लड़की के परस्पर प्रेम होने पर उन की इच्छानुसार होना चाहिये ।

एक पुरुष को एक ही स्त्री के साथ विवाह करना चाहिये आवश्यक्ता होने पर दूसरी से भी । विवाह सम्बन्ध में जो पुरुष को अधिकार हैं वही स्त्री को भी होने चाहियें ।

हर विषय में स्त्री पुरुषों के समानाधिकार होने चाहियें ।

स्त्रियों का आदर मान करना चाहिये और उन्हें प्रणाम करनी चाहिये । पैर की जूती समझने की अपेक्षा सिर का मुकुट समझना चाहिये । इस के स्मरणार्थ "गौरी शंकर सीताराम राधे श्याम श्यामाश्याम" इस मन्त्र का जप करना चाहिये ।

स्त्री को पातिव्रत धर्म और पुरुष को नारिव्रत धर्म पालन करना चाहिये ।

स्त्री पुरुषों को अनुगामी होना चाहिये ।

अच्छे २ लाभ दायक पुण्य उत्तम वृक्ष लगाने चाहियें । वृक्षों तथा औषधियों की नसल बढ़ा कर प्रभूत फल देने वाले बनाने चाहियें ।

तालाब कूंवा मन्दिर प्याऊ आदि बनवाने चाहियें ।

ब्याज छोड़ा लेना चाहिये ।

देश और धर्म के लाभ को विचारते हुये व्यापार करना चाहिये ।

दश दश पांच २ ग्रामों के मध्यम में एक एक आश्रम बनाना चाहिये और वहां ही जंगल में लड़के लड़कियों की पाठशाला होनी चाहिये ।

कभी २ नाचना और गाना भी चाहिये

वृद्ध मां बाप की सेवा करनी चाहिये ।

मुकुट दार टोपी तथा टोप पहनना चाहिये ।

बालकों को खेल के द्वारा विद्या सिखानी चाहिये ।

सब को बांसुरी बजानी चाहिये ।

ब्रह्म मुहूर्त्त में उठना चाहिये ।

किसी काम को अकेले ही न सोच कर दूसरे की सलाह करनी चाहिये ।

अपने पापों को प्रकट कर शुभ कर्मों को छिपाना चाहिये ।

ऋण से मुक्त रहना चाहिये ।

जैसे तुरत की ब्याई गौ अपने बच्छे से प्यार करती है वैसे ही सब से वर्त्तना चाहिये ।

अपने लाभ में से दशवां भाग पुण्य करना चाहिये ।

रात को मुंह ढवाह कर सोना चाहिये ।

रात को दक्षिण की ओर, दिन में उत्तर की ओर, और दोनों सन्ध्याओं में उत्तर को मुख करके मलमूत्र का विसर्जन करना चाहिये ।

एक हाथ से शिर खुजाना चाहिये।

मनुष्य को अपनी स्वतन्त्रता से ऐसा धर्म स्वीकार करना चाहिये। जिस में प्रीति उत्साह और निर्भयता होवे।

थोड़ा बोलना चाहिए और कभी २ मौन भी रखना चाहिए।

धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह करना चाहिए, सुखियों से मित्रता, दुःखियों पर दया, साधुवों के साथ मुदिता, और दुर्जनों के साथ उपेक्षा करनी चाहिए।

भजन १

बंदौ श्री हरिपद सुख दाई ॥ टेक ॥
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै।
अंधरे को सब कुछ दरशाई ॥ १ ॥
बहिरो सुने गूंग पुनि बोलै।
रंक चलै शिर छत्र धराई ॥ २ ॥
सूरदास स्वामी करुणामय।
बारम्बार नमो तिहिं पाई ॥ ३ ॥

२

बंदौ मैं चरण सरोज तिहारे ॥ टेक ॥
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन,
ललित त्रिभंग प्राणपति प्यारे।
जे पद पद्म सदा शिव को धन,
सिन्धु सुता उर से नहिं टारे ॥
से पद पद्म नात रिस त्रासत,
मन वच क्रम प्रह्लाद सम्हारे।
जे पद पद्म फिरत वृन्दावन,
अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे।
जे पद पद्म परस व्रज युवति,
सबंस दे सुत सदन बिसारे।
जे पद पद्म लोकत्रय पावन,
सुरसरि दरश कटत अघ भारे।
जे पद पद्म परसि ऋषि पत्नी,
नृप अरु व्याध अमित सब तारे।
जे पद पद्म फिरत पाण्डव गृह,
दूत भये सब काज संवारे।
ते पद पंकज सूरदास प्रभु,
त्रिविधताप दुःख हरण हमारे ॥

३

बंशी वारे मोरी गली आजारे ॥ टेक ॥
तेरे बिन देखे कल ना परत है,
दुरस मुखड़ा दिखलाजा रे ॥ १ ॥
रैन दिना मोहिं ध्यान तिहारो,
बंशी की टेर सुनाजा रे ॥ २ ॥
चरणदास सुखदेव पियारे,
मेरो हि माखन खाजारे ॥ ३ ॥

४

गारी मत दीजो मो गरीबनी को जायो है ॥ टेक ॥
तेरो जो बिगारयो सो तो मोसों कही आन बीर,
मैं तो काहू बात को नहीं तरसायो है ॥ १ ॥
दधि की मटुकिया भरी आंगना में आनि धरी,
तोल तोल लीजो बीर जेतो जाको सायो है ॥ २ ॥
सूरदास प्रभु प्यारे नेक हू न हूजे न्यारे,
कान्हारा सो पूत मैंने बड़े पुण्य पायो है ॥ ३ ॥

५

तेरो मुख नीको कि मेरो राधा प्यारी ॥ टेक ॥
दर्पण हाथ लिये नंदनंदन,
सांची कहो रूप भानु दुलारी ॥ १ ॥

अवस्था आती है। जब हंस पद्म का त्याग करता तब हंस तुरिया अवस्था को प्राप्त होता है। जब नाद में लीन होता है तब उसे तुर्यातीत, उन्मुनन, अजप्य तथा अपसंहार ऐसे नाम से कहते हैं। इस प्रमाण से सर्व भाव हंस के समान होता है। अतः मन में रहे हुए हंसका चिंतन करना योग्य है। जब १ करोड़ जप किए जाते हैं तब यह हंसनाद का अनुभव करता है इस का प्रमाण हंस के समान होता है। नाद दश प्रकार का होता है। १ चिण, २ चिंचिण, ३ घण्टा-नाद, ४ शंखनाद, ५ तन्त्रीनाद, ६ ताल नाद, ७ वेणु नाद, ८ मृदंगनाद, ९ भेरी नाद, १० मेघनाद, इस प्रकार के पूर्व की नौ नादों को त्याग कर दसवें नाद का अभ्यास करना चाहिए।

प्रथम नाद के अनुभव से गात्र चिनमिनाता है। द्वितीय नाद के अनुभव से गात्र का भंग होता है। तृतीय नाद के अनुभव से प्रस्वेद होता है। चतुर्थ नाद के अनुभव से शिरोकम्प, पञ्चम में तालु टपकता है, छटे के अनुभव में अमृत वृष्टि होती है, सातवें के अनुभव में विज्ञान होता है, आठवें में श्रेष्ठ वाणी होती है, नवें में अदृश्य विद्या तथा दिव्य नेत्र प्राप्त होते हैं और दशम के अनुभव में परब्रह्म-भाव प्राप्त होता है तथा ब्रह्मात्मा का साक्षात्कार होता है। मन उस हंस में लय होता है तथा संकल्प विकल्प का मन में लय होता है पीछे पुण्य तथा पाप का नाश होता है तथा वह हंस सदा शिवरूप से, शक्ति युक्त रूप से, सर्वत्र स्थिति कर्ता रूप से, स्वयं ज्योति रूप से, शुद्ध रूप से बुद्ध रूपसे अर्थात् ज्ञान रूपसे, नित्य रूप, से मायः सेरहित रूप से, तथा शास्त रूप से प्रकाशता है। इस प्रमाण में वेद वचन है, ऐसा वेद वचन है।

महात्माओं के वाक्य

दि तुम सर्वज्ञ परमेश्वर के श्रीचरणों की पूजा नहीं करते हो, तो तुम्हारी यह सारी विद्वत्ता किस काम की?

जो मनुष्य हृदय कमल के अधिवासी श्रीभगवान के पवित्र चरणों की शरण लेता है वह संसार में बहुत समय तक जीवित रहेगा।

धन्य है वह मनुष्य जो आदि पुरुष के पादारविन्द में रत रहता है। जो न किसी से प्रेम करता और न घृणा, उसे कभी कोई दुःख नहीं होता। जो मनुष्य प्रभु के गुणों का उत्साह पूर्वक गान करते हैं उन्हें अपने भले बुरे कर्मों का दुःखप्रद फल नहीं भोगना पड़ता।

जो लोग उस परम जितेंद्रिय पुरुष के दिखाए धर्म मार्ग का अनुसरण करते हैं वे दीर्घजीवि होंगे।

केवल वही दुःखों से बच सकते हैं जो इस अद्वितीय पुरुष की शरण में आते हैं।

धन-वैभव और इंद्रिय सुख के तूफानी समुद्र को वही पार कर सकते हैं जो उस धर्मसिंधु मुनीश्वर के चरणों में लीन रहते हैं।

जो मनुष्य सकल गुणों से अभिभूत परब्रह्म के चरण कमलों में शिर नहीं झुकाता वह उस इंद्रिय के समान है जिस में अपने गुण को ग्रहण करने की शक्ति नहीं है।

जिन लोगों ने सब इंद्रिय सुखों को त्याग दिया है और जो तापसिक जीवन व्यतीत करते हैं, धर्मशास्त्र उनकी महिमा को और सब बातों से अधिक उत्कृष्ट बताते हैं।

तुम तपस्वी लोगों की महिमा को पा नहीं सकते ? यह काम उतना ही मुश्किल है जितना सब मुर्दों की गणना करना।

जिन लोगों ने परलोक के साथ इहलोक का मुकाबिला करके इसे त्याग दिया है, उनकी ही महिमा से यह पृथिवी जगमगा रही है।

जो पुरुष अपनी सुदृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा अपनी पांचों इंद्रियों को इस तरह वश में रखता है, जिस तरह हाथी अंकुश द्वारा वश में किया जाता है, वास्तव में वही स्वर्ग के खेतों में बोने योग्य बीज है।

जितेंद्रिय पुरुष की शक्ति का साक्षी स्वयं देवराज इंद्र है।

महान् पुरुष वही हैं जो असम्भव कार्यों का सम्पादन करते हैं और दुर्बल मनुष्य वे हैं जिस से यह काम हो नहीं सकता।

जो मनुष्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध इन पांच इन्द्रिय विषयों का यथोचित मूल समझता है, वह सारे संसार पर शासन करेगा।

संसार भर के धर्म-ग्रंथ सत्यवक्ता महात्माओं की महिमा की घोषणा करते हैं।

त्याग की चट्टान पर खड़े हुए महात्माओं के क्रोध को एक क्षण भर भी सह लेना असम्भव है।

साधु प्रकृति पुरुषों ही को ब्राह्मण कहना चाहिए। वही लोग सब प्राणियों पर दया करते हैं।

हे मनुष्य ! अपने मनमें विचार कर और सोच कि तू किस लिए पैदा किया गया है।

अपनी शक्तियों का चिन्तन कर, अपनी आवश्यकताओं और अपने सम्बन्धों का चिन्तन कर, इस से तुझे जीवन के कर्तव्यों का पता लग जायगा, और तेरे सारे मार्गों में तुझे व्यवस्था मिलेगी।

जब तक तू अपने मन में अच्छी तरह न सोच ले, न तो कुछ बोल और न कोई काम कर। जो पग तू उठाए उसके परिणाम पर विचार करके उठा। इस से अपमान तुझ से दूर भागेगा, और लज्जा तेरे घर में घुसने न पावेगी. पश्चात्ताप तेरे निकट न आयेगा, और तेरे कपोल शोक का निवास स्थान न बनेंगे। वे समझ मनुष्य अपनी ज़बान को लगाम नहीं देता। जो जी में आता है बक देता है और अपने ही शब्दों की मूर्खता में फंस जाता है।

जो मनुष्य परिणाम पर विचार किए बिना सहसा कोई काम करता है वह उस व्यक्ति के सदृश है जो जल्दी में भागता हुवा बाड़ को फांद कर उस के दूसरी ओर गढ़ेमें जा गिरता है। इस लिए विचार की आवाज़ को कान देकर सुनो, उसकी बातें बुद्धिमत्ता की बातें हैं, और उसके मार्ग तुझे निर्विघ्नता और सत्यता तक पहुंचा देंगे।

तू कौन है जो अपनी बुद्धि पर इतना गर्व करता है ? अपनी योग्यताओं पर तू इतना घमण्ड क्यों करता है ?

यदि तू ज्ञानवान बनना चाहता है तो सब से पहले यह जान कि मैं अज्ञानी हूं, यदि तू दूसरों के निकट मूर्ख नहीं बनना चाहता तो अपने अभिमान

में अपने आप को बुद्धिमान समझने की मूर्खता मत कर।

लज्जाशील मनुष्य की भीरुता सच्चाई की शोभा बढ़ा देता है, और उस के शब्दों का आत्म सन्देह उसकी भूल को क्षमा कर देता है।

वह अपनी बुद्धि पर पूरा २ भरोसा नहीं करता, वह मित्र के परामर्श पर विचार करता है और उस से लाभ उठाता है।

जब उस की प्रशंसा की जाती है तो उसके कान बहरे हो जाते हैं और वह अपनी प्रशंसा को सच्ची नहीं समझता। वह अन्त काल तक अपने गुणों से अनभिज्ञ रहता है।

जिस प्रकार घूंघट से रूप बढ़ जाता है उसी प्रकार विनय रूपी यवनिका से उसके गुण चमक उठते हैं।

विपक्ष में दम्भी और अभिमानी मनुष्य को देखो, वह बहु मूल्य पोशाक पहनता है, बाजार में अकड़ कर चलता है, इधर उधर देखता जाता है और चाहता है कि लोग उसे देखें।

वह ऊपर को शिर उठा कर चलता है और गरीबों को घृणा की दृष्टि से देखता है। वह अपने मन में अपने आप को बहुत बड़ा समझता है, अपनी प्रशंसा सुनने और सारा दिन अपने ही गुण गाने में उसे आनन्द आता है।

वह आत्मश्लाघा से बहुत फूलता है परन्तु मिथ्या प्रशंसक उल्लू बना कर उसे खा जाता है।

जो समय बीतगया वह फिर लौट कर न आयेगा, और जो समय आने वाला है सम्भव है वह तेरे लिये न आवे, इस लिये तू वर्तमान से लाभ उठा, भूत के खोजाने पर खेद न कर, और भविष्य पर बहुत ज़ियादा भरोसा रख।

यह घड़ी तेरी है अगली घड़ी भविष्य के गर्भ में है, और तू नहीं जानता कि वह तेरे लिये क्या लावे?

जो कुछ तू करना चाहता है उसे फौरन करदे जो काम प्रातः हो सकता है उसे सायंकाल पर मत छोड़।

आलस्य दरिद्रता और दुःख की जननी है, परन्तु धर्मानुकूल परिश्रम करने से सुख की प्राप्ति होती है।

उद्योग से दरिद्रता भागती है, ऐश्वर्य और साफल्य पुरुषार्थी मनुष्य के सेवक हैं।

धन-सम्पति, मान प्रतिष्ठा, यश कीर्ति और राजकृपा किसको प्राप्त हैं? जो अनुद्योग को अपने निकट नहीं आने देता और आलस्य को कहता है "तू मेरा शत्रु है"

वह ब्राह्म मुहूर्त्त में उठता है और रात को वह चिन्तन से मन का और क्रिया से शरीर का व्यायाम करता है, और दोनों को तन्दुरुस्त बनाये रखता है।

आलसी मनुष्य अपने लिये आपही भार है, उसका समय सुगमता से नहीं बीतता, वह इधर उधर घूमता फिरता है और नहीं जानता कि क्या काम करे।

उसके दिन बादल की छाया की तरह गुज़र जाते हैं, वह अपने पीछे कोई स्मारक नहीं छोड़ जाता।

एक राजा ने एक कैदी को मारने का इशारा किया। बेचारे कैदी ने इस निराशा की दशा में बादशाह को गाली देना और कड़ी बातें कहना शुरु

किया । जो आदमी जान से हाथ धो बैठता है वह अपने दिल में जो कुछ होता है सब कह डालता है। आपत्ति के समय में जब भागने का कोई रास्ता नहीं रहता, तब आदमी तेजी तलवार के सिरे को मुट्ठी में पकड़लेता है। जब मनुष्य निराश होजाता है तब उसकी जबान बढ़ जाती है, जैसे बिल्ली निराश होकर कुत्ते पर झपटती है।

राजा ने पूछा यह क्या कहता है। तब एक सज्जन मन्त्री ने जवाब दिया कि "हेप्रभो यह कहता है, कि जो अपने क्रोध का दमन करते हैं और जो मनुष्यों पर क्षमा करते हैं उन परोपकारियों से परमेश्वर प्रेम करता है"।

राजा को दया आई और वह उसके खून से बाज आया। एक दूसरे मन्त्रि ने जिसका स्वभाव इस मन्त्रि से उलटा था कहा कि, "मनुष्यों को राजाओं के सामने सच के सिवा कुछ न कहना चाहिये। इसने राजा को गालियें दी हैं और अनुचित बातें कहीं हैं"। राजा ने इस बात पर क्रोध किया और कहा, "उसने जो झूठ बोला है वह मुझे तेरे इस सच बोलने से अधिक पसन्द आया। क्योंकि उस झूठ का रुझान नीति की ओर था, और इस सच की जड़ बुराई और दुष्टता पर है। बुद्धिमानों ने कहा है कि नीति युक्त असत्य विवाद कारी सत्य सत्य से अच्छा है जिन की कही राजा मानता है वह यदि नेकी के सिवाय कुछ कहें तो बड़ा अनर्थ होवे"।

हे भाई ! यह दुनिया किसी आदमी के साथ नहीं रहती। संसार के कर्ता में दिल लगाओ और सन्तोष करो। इस दुनिया में अपना तकिया न बनाओ और अपनी पीठ न लगाओ क्योंकि इस दुनियां ने तुम्हारे ऐसे बहुत से मनुष्यों को पाल कर मार डाला है। जब पवित्रात्मा जाने का संकल्प करे, तो चाहे राज सिंहासन पर मृत्यु हो, चाहे धूल में सब बराबर है !

सत्यवान जाबालाख्यान

[ले० श्री० सूरजदेवी श्रीभगवद्भक्ति आश्रम]

उपनिषद् में ब्रह्मचर्यव्रत के विषय में एक कथा है।

सत्यकाम जाबाल ने अपनी माता से कहा है मातः ! मैं ब्रह्मचर्य व्रत धारण करूंगा अतः मैं यह जानना चाहता हूं कि मैं किस गोत्रका हूं पहिले गुरु की सेवा करने को ब्रह्मचर्य व्रत कहते थे ब्रह्म नाम ज्ञान तथा वेद का है उसके प्राप्त्यर्थ जो चर्या (सेवा) करना है यही ब्रह्मचर्य का अर्थ है। अथवा ब्रह्म जो सबका स्वामी ईश उस की प्राप्ति के लिये जो " अहं ब्रह्म "का ज्ञान उस ज्ञान का साधन है गुरु की सेवा करना। वेदका अध्ययन बाल्यावस्था में ही सम्यक् प्रकार से होता है अतः ऋषि महर्षियों ने मनुष्य की पहिली अवस्था ब्रह्मचर्यावस्था नाम करके वर्णन की है। इसी ज्ञान प्राप्ति के लिये सत्यकाम ने गुरु कुलमें रह कर गुरुकी सेवा करने का विचार किया। जब उसने अपनी माता से गोत्र पूछा (गोत्रपहिले पिताके नामको कहते थे) तब उसकी माताने कहा:-

हे पुत्र ! मैं तेरा गोत्र नहीं जानती हूं क्योंकि मैंने तुझे यौवन अवस्था में प्राप्त किया है से अधिक लज्जा होने के कारण मैं नाम नहीं पूछ सकी। अतः मैंनहीं जानती तू किस गोत्रका है। पहिले गुरु शिष्य

प्राप्त होता है ! जो आतुर संन्यास लिया हो तो मन वाणी से सब का त्याग करना चाहिये। इस प्रकार ब्रह्म के योग्य न हो ऐसे मार्ग से गमन करता है तो भी वह ब्रह्म ज्ञानी कहा जाता है इसका क्या कारण है ? तब याज्ञवल्क्य ने कहा कि, जो परम हंस संन्यासी है उनमें से आरुणि, असंवर्तक, श्वेतकेतु दुर्वासा, ऋतु, निदाघ, जड़ भरत दत्तात्रेय और रैवतक आदि परम हंस वर्णाश्रम के सब चिह्नों से रहित थे। उनके आचार विचार जानने में न आवें ऐसे थे। वे उन्मत भाव से रहित होकर भी उन्मत के समान दीखते थे। संन्यासियों को त्रिदण्ड, कमण्डलु, छींका, जल से शुद्ध ऐसा पात्र, शिखा और यज्ञोपवीत इन सबका "भुस्वाहा" कर जल में त्याग कर आत्मा को ढूंढना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रारब्ध के योग से स्थूल रूप को धारण करते हुए भी वह सब प्रकार के बंधन से रहित होता है। वह प्रतिग्रह का त्याग करता है। वह ब्रह्ममार्ग में भली प्रकार आगे बढा हुवा होता है, शुद्ध मन वाला होता है। वह मुक्त है तो भी प्राण के टिकाने के लिये योग्य समय पर उदर रूपी पात्र में आहार डालता है। लोभालोभ में समान दृष्टि वाला होता है। एकान्त स्थान, देवमन्दिर, घासका समूह, सर्प का बिल, वृक्षों का मूल, कुम्हार का घर, अग्नि होत्र वाला मकान रेतिया नदी, पर्वत, गढ़ा, गुफा, छोटे छोटे झरनों वाले स्थान में रहने के लिये सब प्रकार के घरसे रहित होता है। "मेरा" यह अभिमान भी उसको नहीं होता है। शुद्ध ज्योति के ध्यान में तत्पर होता है। अध्यात्म ज्ञान में निष्ठा होती है और शुभाशुभ कर्म के छेदन करने में तत्पर रहता है। इस रीति का संन्यास करके जो अपने देह का त्याग करता है वह परम हंस संन्यासी है। वह ही परम हंस संन्यासी है।

महात्माओं के वाक्य

र्म से मनुष्य को मोक्ष मिलता है, और उस से धर्म की प्राप्ति भी होती है, फिर भला धर्म से बढ़ कर लाभदायक वस्तु और क्या है ?

धर्म से बढ़ कर दूसरी और कोई नेकी नहीं, और उसे भुला देने से बढ कर दूसरी और कोई बुराई भी नहीं है।

नेक काम करने में तुम लगातार लगे रहो, अपनी पूरी शक्ति और सब प्रकार से पूरे उत्साह के साथ उन्हें करते रहो।

अपना मन पवित्र रक्खो, धर्म का समस्त सार बस इसी एक उपदेश में समाया हुवा है। बाकी और सब बातें कुछ नहीं, केवल शब्दाडम्बर मात्र हैं

ईर्षा, लालच, क्रोध और अप्रिय वचन इन सब से दूर रहो। धर्म प्राप्ति का यही मार्ग है।

यह मत सोचो कि मैं धीरे २ धर्म मार्ग का अवलम्बन करूंगा। बल्कि अभी बिना देर लगाए ही नेक काम शुरू कर दो क्योंकि धर्म ही वह वस्तु है जो मौत के दिन तुम्हारा साथ देने वाला अमर मित्र होगा।

मुझ से यह मत पूछो कि धर्म से क्या लाभ है ? बस एक बार पालकी उठाने वाले कहारों की ओर देख लो और फिर उस आदमी को देखो जो उस में सवार है।

अगर तुम एक भी दिन व्यर्थ नष्ट किए बिना समस्त जीवन पर्यन्त नेक काम करते हो तो तुम आगामी जन्मों का मार्ग बन्द किए देते हो।

केवल धर्म जनित सुख ही वास्तविक है। बाकी सब तो पीड़ा और लज्जा मात्र हैं।

जो कर्म धर्म-सङ्गत है बस वही कार्य रूप में परिणत करने योग्य है। दूसरी जितनी बातें धर्म विरुद्ध हैं उन से दूर रहना चाहिए।

मृतकों का श्राद्ध करना, देवताओं को बलि देना, आतिथ्य सत्कार करना, बंधु-बान्धवों को सहायता पहुंचाना और आत्मोन्नति करना यह गृहस्थ के पांच कर्म हैं।

जो पुरुष बुराई करने से डरता है और भोजन करने से पहिले दूसरों को दान देता है उस का वंश कभी निर्बीज नहीं होता।

जिस घर में स्नेह और प्रेम का निवास है जिस में धर्मका साम्राज्य है वह सम्पूर्णतया संतुष्ट रहता है अर्थात् उसके सब उद्देश्य सफल होते हैं।

देखो जो स्त्री दूसरे देवताओं की पूजा नहीं करती किन्तु बिछौने से उठते ही अपने पतिदेव को पूजती है, जल से भरे हुए बादल भी उसका कहना मानते हैं।

वही उत्तम सहधर्मिणी है जो अपने धर्म और यश की रक्षा करती है और प्रेम पूर्वक अपने पति की आराधना करती है।

चार दिवारी के अन्दर पर्दे के साथ रहने से क्या लाभ ? स्त्री के धर्म का सर्वोत्तम रक्षक उसका इंद्रिय निग्रह है।

जो स्त्रियां अपने पति की आराधना करती हैं, स्वर्गलोक के देवता उनकी स्तुति करते हैं।

पुत्र के प्रति पिता का कर्तव्य यही है कि वह उसे सभा में प्रथम पंक्ति में बैठने के योग्य बना दे।

यदि तुम को यश की लालसा है, यदि तुम्हें अपनी प्रशंसा सुननेमें आनन्द आता है, तो तू अपने को उस धूलि से ऊंचा कर जिस से तू बना है, और अपना कोई प्रशंसनीय उच्च उद्देश्य बना।

बरगद का विशाल वृक्ष जिसकी शाखायें इस समय गगन का चुम्बन कर रही हैं, एक समय पृथ्वी के पेट में राई के समान छोटा सा बीज था।

तू अपने व्यवसाय में, चाहे वह कोई हो शीर्ष स्थानीय होने का यत्न कर, उन्नति में किसी को अपने से आगे न बढने दे। तिस पर दूसरों के गुणों को देख कर जल मत, प्रत्युत अपनी बुद्धि को बढा।

पवित्र स्पार्धा से मनुष्य की आत्मा उच्च होती है, वह कीर्ति के लिए तड़फता है।

वह विघ्न बाधाओं के होते हुए भी ताड़ के पेड़ की तरह बढ़ता है, और नभोमण्डल में गरुड़की तरह बहुत ऊंचा उड़ता है और अपनी आखें सूर्य के तेज पर लगाए रहता है।

महापुरुषों के दृष्टांत रात को स्वप्न बन कर उस के सामने आते हैं और दिन भर उन का अनुकरण करने में ही उसे आनन्द प्राप्त होता है।

ईर्षालु का हृदय विष और द्वेष से पूर्ण है, उसकी जिह्वा विष उगलती है, अपने पड़ोसीकी सफ-

लता को देख कर उस का मन अशान्त हो जाता है

विद्वेष और घृणा उस के हृदय को खाते रहते हैं और उसे पल भर भी चैन नहीं मिलता।

जो लोग उस से बढ़ जाते हैं वह उनकी निन्दा करता है। जो भी काम वे करते हैं उन सब का बुरा अर्थ निकालता है।

दूरदर्शिता की बातों को दत्तचित्त होकर सुन, उसके उपदेशों पर ध्यान दे, और अपने हृदय में उन का संग्रह कर, उस के तत्त्व सर्वत्रिक हैं, और सारे सद्गुण उसी के आश्रित हैं। वह मानव जीवन की पथप्रदर्शिका और स्वामिनी है।

अपनी ज़बान को लगाम दे, अपने होठों को नियम में रख, जिस से कहीं तेरे मुंह से निकले हुए शब्द ही तेरी शान्ति को नष्ट न कर दें।

लंगड़े की हंसी मत कर, ऐसा न हो कभी तू भी लंगड़ा हो जाय, जो मनुष्य दूसरे की त्रुटियों की खुशी से चर्चा करता है उसे अपनी त्रुटियों को सुन कर दुःख होगा।

बहुत बोलने का फल अनुताप होता है इस लिए चुप रहने में भलाई है।

शेखी मत मार, क्योंकि इस से लोग तेरा तिरस्कार करने लगेंगे। दूसरे की हंसी मत उड़ा, क्योंकि यह भय से खाली नहीं है।

कटु परिहास मित्रता का घातक है। जो मनुष्य अपनी जबान को काबू में नहीं रख सकता वह कष्ट और संकट में फंस जाता है।

अपने वित्त से बाहर खर्च मत कर जिस से युवाकाल की मितव्ययिता वृद्धावस्था में तेरे सुख का कारण हो।

तृष्णा पाप कर्मों की जननी है, परन्तु मितव्ययिता हमारे सद्गुणों की रक्षक है।

तेरा मनोरञ्जन ऐसा न होना चाहिए जिसके लिए तुझे भारी व्यय करना पड़े।

जो मनुष्य जीवन की अनावश्यक चीजों में मग्न रहता है उसे एक दिन तत्सम्बन्धी आवश्यक चीजों के अभाव के कारण रोना पड़ता है।

दूसरों के अनुभव से बुद्धिमता सीख, उनकी त्रुटियों से अपने दोषों को ठीक कर।

परीक्षा करके देख लेने के पहिले किसी पर विश्वास मत कर, परन्तु अकारण किसी पर अविश्वास भी न कर; यह अनुदारता है।

जब कोई मनुष्य ईमानदार साबित हो जाय, तो फिर उसे अपने हृदय में खजाने की तरह सुरक्षित रख, उसे एक अमूल्य रत्न समझ।

जो काम दूर दृष्टि और सावधानी से हो सकता है उसे दैव पर मत छोड़।

खुरासान के एक बादशाह ने सबुकतगीं के पुत्र सुलतान महमूद को उसकी मृत्यु के सौ वर्ष बाद स्वप्न में देखा। उसका सारा शरीर गल कर मिट्टी हो गया था सिवाय आंखों के जो अब भी अपने कोयों में इधर उधर घूम रही थीं। शाही दरबार का कोई भी चतुर पुरुष स्वप्न का अर्थ न लगा सका, पर वहां एक साधु आ पहुंचा। उसने कहा कि आज भी महमूद की आंखें यह देख रही हैं कि मेरा राज्य दूसरों के अधिकार में है।

बहुत से नामवर लोग जमीन के नीचे गड़े हैं जिनके अस्तित्व का कोई चिह्न जमीन के ऊपर नहीं है।

जिस पुरानी लाश को मिट्टी के सुपुर्द किया था उसे मिट्टी ने ऐसा खा लिया है कि एक हड्डी भी बाकी नहीं रही।

अपने न्याय के कारण नौशेरवां (फारिस का एक प्रसिद्ध राजा) का शुभ नाम जीवित है यद्यपि उसे मरे बहुत वर्ष व्यतीत हो गए।

अरे भले आदमी! नेकी कर और अपनी उम्र को ग़नीमत समझ।

जब तक मनुष्य बात नहीं करता तब तक उस के गुण और दोष छिपे रहते हैं।

मैं वह नहीं हूं कि युद्ध के दिन पीठ दिखाऊं। मैं वह हूं जिस का सिर खाक और खून के बीच में तुम देखोगे।

यदि संसार से हुमां (एक प्रकार की शुभ चिड़िया) का अस्तित्व उठ जाय तो भी उल्लू की छाया के नीचे कोई न जायगा।

यदि कोई ईश्वर भक्त आधी रोटी खा रहा हो तो दूसरी आधी साधुओं को दे देगा।

यदि राजा सात देशों पर भी अधिकार करले तो फिर भी वह किसी अन्य देश की विजय का स्वप्न देखता है।

यदि किसी वृक्ष ने इसी समय जड़ पकड़ी है तो वह एक मनुष्य के बल से अपने स्थान से उखड़ आयेगा। अगर तुम उसे इसी तरह कुछ दिन छोड़ दोगे तो तुम उसको चर्खी के द्वारा भी जड़ से नहीं उखाड़ सकते।

जिसकी जड़ बुराई है वह नेकी की छाया नहीं पकड़ता, बुरे को शिक्षा देना वैसा ही है जैसे गुम्बज़ पर अखरोट रखना।

आग को बुझाना पर भूमल को रहने देना, सांप को मारना पर उसके बच्चे को पालना बुद्धिमानों का काम नहीं है।

नीच पुरुषों के साथ अपना समय मत नष्ट करो हजरत नूह का लड़का बुरों के साथ बैठा तो उसका पैगम्बरी का वंश जाता रहा।

क्या तुम नहीं जानते कि जाल ने रुस्तम से कहा था कि शत्रुको निर्बल, दीन, असहाय न समझना चाहिये?

जब स्वभाव बुरा होता है तब शिक्षक की शिक्षा कोई काम नहीं करती।

मिट्टी जोहे से कोई अच्छी तलवार कैसे बना सकता है। ऐ बुद्धिमान! नीच पुरुष शिक्षा से किसी काम का नहीं हो सकता।

मोह के स्वभाविक अनुग्रह में कोई अंतर नहीं है पर वह बाग़ में लाल उगाता है और खारी मिट्टी में कांटे।

बुरों के साथ नेकी करना ऐसा ही है जैसा कि नेकों के साथ बुराई करना।

आयुर्वेद शिक्षा।

(ले० पं० रामरक्षपाल वैद्य शास्त्री)

आन्हिक कर्म्म (दिन चर्या)

आज कल बहुत मनुष्य अपने नित्य कर्म से ऐसे च्युत होगये हैं कि जिसका कुछ कथन ही नहीं विशेष ध्यान देकर देखते हैं तो हम लोगों के लिये

महात्माओं के वाक्य

हे मनुष्य ! तुझे उचित है कि तू बाल्यावस्था से ही अपने हृदय को धैर्य और निर्भीकता से दृढ़ बना ले ताकि तू दुःखों को धीरता से सहन करसके।

मरुस्थली में ऊंट जिस प्रकार भूख, प्यास, ताप और कष्ट झेलता है, लेकिन गिर नहीं पड़ता, इसी प्रकार मनुष्य का धैर्य सब विपत्तियों से उसे आश्रय देता है।

श्रेष्ठ आत्मा भाग्य के विद्वेष की परवाह नहीं करता, उसकी आत्मा की महत्ता में इस से कोई फर्क नहीं आता।

समुद्र-तट की चट्टान के सदृश वह दृढ़ बना रहता है, और विपत्ति रूपी तरंगों के थपेड़े उसके पांवों को नहीं उखाड़ सकते।

वह पहाड़ी दुर्ग के मीनार की तरह अपना शिर ऊपर को उठाता है, और भाग्य के बाण उसके पांवों पर गिरते हैं!

भय के समय उसके हृदय की धीरता उसे आश्रय देती है, और उसके मन की स्थिरता उसे सहायता प्रदान करती है।

कातर पुरुष की भीरु आत्मा उसे धोखा देती है और वह लज्जित होता है।

जैसे हवा के झोंके से सरकण्डा हिल जाता है वैसे ही वह दुःख की छाया से कांप उठता है।

हे मनुष्य ! मत भूल कि पृथ्वी पर तेरी स्थिति परमेश्वर की पवित्र बुद्धि द्वारा निश्चित हुई है। वह तेरे हृदय की सारी बातों को जानता है, तेरी लालसाओं की निःसारता उसे भली भांति ज्ञात है, वह प्रायः दया करके तेरी प्रार्थनाओं को अस्वीकार कर देता है।

वह व्याकुलता जिस का तू अनुभव करता है, वह विपत्तियां जिन पर तू विलाप करता है, उन का मूल तेरी मूर्खता, तेरा अहंकार और तेरी रुग्ण भावना है।

ईश्वरीय विधान पर अन्तर्विलाप न कर, प्रत्युत अपने हृदय को शुद्ध कर, न मन में यही कह कि "यदि मेरे पास सम्पत्ति, शक्ति और अवकाश हो तो मैं सुखी हूंगा" क्योंकि जिनके पास यह मौजूद हैं वे किन २ दुःखों में फंसे हुए हैं।

किसी मनुष्य को बाहर से सुखी देख कर ईर्ष्या मत कर, क्योंकि तू उसके गुप्त दुःखों को नहीं जानता।

थोड़े पर संतोष करना सब से बड़ी बुद्धिमानी है, और जो मनुष्य अपने धन को बढ़ाता है वह अपनी चिन्ताओं को बढ़ा लेता है लेकिन सन्तुष्ट मन एक गुप्त खजाना है, और वह दुःख की पहुंच से बाहर है।

यदि तू लक्ष्मी के प्रलोभनों में फंस कर न्याय मर्यादा, उदारता, और विनय को तिलाञ्जलि दे दे, तो खुद ऐश्वर्य भी तुझे दुःखित नहीं कर सकता।

भलाई एक दौड़ है जो नारायण ने नर के लिये नियत कर दी है, और सुख उस का लक्ष्य है, जहांकि दौड़ को समाप्त किये बिना कोई पहुंच नहीं सकता, फिर उसे नित्यता के प्रासादों में राजमुकुट मिलता है।

ऐसा डण्डा कहां है जो प्रेम के दरवाजे को बन्द कर सके ? प्रेमियों की आंखों को सुललित अश्रु-बिन्दु अवश्य ही उसकी उपस्थिति की घोषणा किये बिना न रहेंगे।

जो प्रेम नहीं करते वे सिर्फ अपने ही लिये जीते हैं, मगर वे जो दूसरों को प्यार करते हैं उन की हड्डियें भी दूसरों के काम आती हैं।

महात्माओं के वाक्य

कहते हैं कि प्रेम का आनन्द चखने के ही लिये आत्मा एक बार फिर अस्थि पिंजर में बन्द होने को राज़ी हुवा है।

प्रेम से हृदय स्निग्ध हो उठता है और उस स्नेह रूपी शीतलता से ही मित्रता रूपी बहु मूल्य रत्न पैदा होता है।

भाग्यशाली का सौभाग्य इस लोक और परलोक दोनों स्थानों में उसके निरन्तर प्रेम का ही पारितोषक है।

वे मूर्ख हैं जो कहते हैं कि प्रेम केवल नेक आदमियों के ही लिये है, क्योंकि बुरों के विरुद्ध खड़े होने के लिये भी प्रेम ही मनुष्य का एक मात्र साथी है।

देखो, शक्ति हीन कीड़े को सूर्य किस तरह जला देता है! ठीक इसी तरह नेकी उस मनुष्य को जला डालती है जो प्रेम नहीं करता।

जो मनुष्य प्रेम नहीं करता वह तभी फलेगा जब कि मरु भूमि के सूखे हुए वृक्ष के ठूण्ठ में कोपलें निकलेंगी।

बाह्य सौन्दर्य किस काम का जब कि प्रेम, जो आत्मा का भूषण है, हृदय में न हो।

प्रेम जीवन का प्राण है। जिसमें प्रेम नहीं वह केवल मांस से घिरी हुई हड्डियों का ढेर है।

जब घर में महमान हो तब चाहे अमृत ही क्यों न हो, अकेले नहीं पीना चाहिये।

घर आये हुए अतिथि का आदर सत्कार करने में जो कभी नहीं चूकता उस पर कभी कोई आपत्ति नहीं आती।

जो आदमी बाहर जाने वाले अतिथि की सेवा कर चुका है और आने वाले की प्रतीक्षा करता है, ऐसा आदमी देवताओं का सुप्रिय अतिथि है।

जो मनुष्य अतिथि यज्ञ नहीं करता, वह एक दिन कहेगा कि, मैंने मेहनत करके एक बड़ा भारी खज़ाना जमा किया, मगर हाय! वह सब बेकार हुवा क्योंकि वहां मुझे आराम पहुंचाने वाला कोई नहीं है।

धन वैभव के होते हुए भी जो यात्रों का आदर सत्कार नहीं करता, वह मनुष्य नितान्त दरिद्र है।

अनीचा का पुष्प सूंघने से मुर्झा जाता है, मगर अतिथि का दिल तोड़ने के लिये एक निगाह काफी है।

सत्पुरुषों की वाणी ही वास्तव में सुस्निग्ध होती है क्योंकि वह दयार्द्र, कोमल और बनावट से खाली होती है।

नम्रता, और स्नेहार्द्र वक्तृता केवल यही मनुष्य के आभूषण हैं और कोई नहीं।

वे शब्द जो सहृदयता से पूर्ण और क्षुद्रता से रहित होते हैं, इह लोक और परलोक में लाभ पहुंचाते हैं।

मीठे शब्दों के रहते हुए भी जो मनुष्य कड़वे शब्दों का प्रयोग करता है वह मानो पक्के फल को छोड़ कर कच्चा फल खाना पसन्द करता है।

औदार्यमय दान से भी बढ कर सुन्दर गुण, वाणी की मधुरता और दृष्टि की स्निग्धता तथा स्नेहार्द्रता में है।

हृदय से निकली हुई मधुर वाणी और ममता मयी स्निग्ध दृष्टि के अन्दर ही धर्म का निवास स्थान है।

———

अपने जीवन से हाथ धो डाला था पर परमात्मा की दया से वे इस सुखमय जीवन को बिता रहे हैं। सुधारक को भी इस में जो आनन्द मिलता है वह वही जान सकता है।

महात्माओं के वाक्य

१-परमात्मा के दर्शन हृदय की आंख से होंगे।

२-वाद विवाद समय का नष्ट करना है। भगवान् के चरण कमल की उपासना करके परमानन्द की प्राप्ति करनी चाहिये। (शंकराचार्य)

३-सत्य से सम्पत्ति की प्राप्ति नहीं होगी किन्तु स्वतन्त्रता की।

४-सब युगों में विसालता की इच्छा के कारण लोग परमात्मा को भूलते रहे हैं। कौन नहीं जानता कि लालच के वश पक्षी जाल में फंस जाते हैं?

५-परमात्मा के ज्ञान और परमात्मा के प्रेम में बहुत अन्तर है।

६-तू बोलना छोड़ दे फिर परमात्मा जिसने वाणी दी है स्वयं बोलेगा। (शम्स तबरेज़)

७-जो परमात्मा से प्रेम करता है उसको वह तीन गुण प्रदान करता है १-समुद्र की सी उदारता २-सूर्य का सा परोपकार ३-पृथ्वी की सी विनय। (सूफी कहावत)

८-हे परमेश्वर मैं नहीं जानता कि तुझ से क्या मांगूं, तूही इस बात को जान सकता है कि मुझे किस चीज की आवश्यकता है। मैं तो अपने को तेरे अर्पण करता हूं। मेरी मरजी तो यह है कि मैं तेरी इच्छा के अनुकूल वर्ताव करने के योग्य बनूं।

९-मैं चुप हूं, ऐ आत्माओं के आत्मा तू बोल जिसकी इच्छा मात्र से परमाणु २ नृत्य कर रहा है। (शम्स)

१०-जब हृदय की ग्रन्थी टूट जाती है तो जीव अमर होजाता है। (उपनिषद्)

११-बुद्धिमान मित्र ही सब से उत्तम पुस्तकें हैं क्योंकि वह वाणी और दृष्टि दोनों से उपदेश करते हैं।

१२-इस बात को सदैव ध्यान में रक्खो कि इच्छा बन्धन का कारण है और निरिच्छा स्वतंत्रता का हेतु है। (योग वशिष्ठ)

१३-जिस भाव से तुम दूसरों की सेवा करते हो उसी भाव से तुम्हारी सेवा की जावेगी।

१४-मैंने अपनी मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से एक भिखारी को सुवर्ण का दान दिया। उसने उस स्वर्ण को खर्च कर दिया और पहिले की भान्ति भूखा और शरदी से काँपता मेरे पास आया मैंने उसे फिर दिया परन्तु वह फिर उसी अवस्थामें आया, अन्त में मैंने उसे भगवान् की भक्ति का उपदेश दिया उस से वह भगवान् का भक्त और सम्पत्तिशाली बन गया और उसने मांगना छोड़ दिया। (फारसी कविता)

१५-मनुष्य में अज्ञान की अपेक्षा अहंकार अधिक है।

१६-मैं प्रत्येक फूल में उस के दर्शन करता हूं। बादल में वही गरजता है और पक्षियों में वही बोलता है। (राम)

१७-हम प्रकृति के स्वामी नहीं बन सकते हां उसके सेवक हो सकते हैं।

१८-विश्वास मनुष्य का जन्म सिद्ध स्वभाव है। विश्वास मनुष्य में ऐसा ही स्वभाविक है जैसे वृक्ष में पत्ते।

१९-हमारी आवश्कतायें इतनी बढ़ गई हैं कि आत्मा के अनुभव के लिये हमको अवकाश ही नहीं मिलता। इसका यही अर्थ है कि हमने धर्म को तिलांजली दे दी है और परमात्मा के तरफ से मुंह फेर लिया है। (रवीन्द्र)

२०-बुद्धिमान् को उपदेश की आवश्यकता नहीं है और मूर्ख उपदेश सुनना पसन्द नहीं करता परन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि जो आदमी पहले उपदेश सुनना पसन्द नहीं करते हैं वह पीछे बहुत पछताते हैं।

२१-प्रत्येक मनुष्य का हास्य वदन, और मीठे शब्दों से स्वागत करो।

२२-जीवन दुःख से खाली नहीं है क्योंकि धूप के साथ साथ लगा रहता है हमको यह शिकायत नहीं करनी चाहिए कि गुलाब में कांटे हैं वरन परमात्मा को इस बात का धन्यवाद देना चाहिए कि कांटों में फूल बनाए हैं।

२३. अपने उद्देश को पूर्ण करते हुए मरजाने को मौत नहीं कहते। वह धन्य हैं जिन्होंने अपने उद्देश की पूर्ति में जीवन लगा दिया है। इससे उत्तम धन्य कर्म नहीं है॥

२४- उदार बनना चाहते हो तो मितव्ययी बनो, नेता बनना चाहते हो तो वाद विवाद न करो वीर बनना चाहते हो तो नम्र बनो।

२५-जो आदमी, किसी बात को नहीं जानता और यह भी नहीं जानता कि मैं अनभिज्ञ हूं वह मूर्ख है उससे दूर रहो।

२६- प्रयास करने वालेके लिए सब कुछ सम्भव है, आशावादी के लिए इससे अधिक आसान है, और प्रेम करने वाले के लिए बहुत ही आसान है और अभ्यास करने वाले और धैर्य रखने वाले के लिए तो कुछ भी असम्भव नहीं।

मैत्रेयी उपनिषद्

बृहद्रथ नाम के राजा ने अपने बड़े पुत्र को राज्य दिया और यह समझकर कि यह शरीर नाशवान् वैराग्य वृत्ति से अरण्य में गया। वहाँ जाकर उसने परम तप का आरम्भ किया। वह ऊंचे हाथ करके सूर्य के सामने देखा करता था। एक सहस्र वर्ष के अन्त में राजा के पास एक मुनि आया। यह मुनि बिना धूयें के अग्नि के समान तेज वाला था और तेज से सबको जलाता हो ऐसा दीखता था। वह आत्म ज्ञानी था और उसका नाम शाकायन्य था॥ "हे राजन! तू खड़ा हो, खड़ा हो और वरदान चाहता हो सो मांग"। राजा प्रणाम करके कहने लगा "हे भगवन्! मैं आत्मज्ञानी नहीं हूं और आपतो तत्त्वज्ञानी हैं। मैं आपसे श्रवण करने की इच्छा रखता हूं सो आप मुझे उपदेश दीजिए"॥

मुनि ने उत्तर दिया। समझ ने में न आवे ऐसा यह परम प्रश्न तू मत पूछ, जो कुछ दूसरा वरदान मांगना हो सो माँग ले। शाकायन्य मुनि के चरण स्पर्श करके यह गाथा कहने लगा॥

"कितने ही बड़े समुद्र सूख जाते हैं, पर्वतों के शिखिर टूट जाते हैं, ध्रुव पदार्थ चलाय मान होते हैं, वृक्षों के स्थान पर स्थल होजाता है। पृथ्वी जल में डूबजाती है, देवता अपने स्थान से भ्रष्ट होजाते हैं। संसार मे इस प्रकार के काम और भोग किस काम के हैं कि जिनके आश्रय से

देते हो कि नहीं ? तुम्हारे मार्ग में अड़चन न पड़ने पर जब तक तुम्हारी गाड़ी सीधी चलती जायगी तब तक तुम क्रोध भी नहीं करोगे, किन्तु कभी किसी प्रकार अड़चन पड़ने पर क्या अपने मन को वश में रख सके हो ? नहीं। अवश्यता साध्य किसी के साथ लड़ाई झगड़ा न करते होगे किन्तु पहिले जिनके साथ शत्रुता होगई है तथा बाप दादा के समय से जिसके साथ वैर चला आता है, उन्हें क्या तुमने क्षमा कर दिया है ? नहीं। इस प्रकार प्रत्येक विषयों में मन की समता रख सकने का नाम "पहरा देना" है और यह भक्तों का परम धर्म है।

इसके पश्चात् सब से उत्तम और सब से मुख्य धर्म ईश्वर की स्तुति करना है क्योंकि स्तुति से हृदय की शुद्धि होती है, पवित्रता आती है, हृदय में नया बल आता है, पाप वासना का नाश होता है, स्वाभाविक ज्ञान का उदय होता है और स्तुति से मनुष्य ईश्वर के पास जा सकता है इससे स्तुति करना भक्तों का मुख्य धर्म है। स्तुति में नवीनता, धीरता, मन की शांति, आकर्षण और एकाग्रता है। स्तुति में एक प्रकार की समाधि, मानसिक आनन्द, हृदय को दिलासा, आत्मिकबल है और स्तुति में महा शक्ति के साथ ही साथ तार लगा रहता है इससे शिव ब्रह्मादिक भी परम कृपालु परमात्मा की स्तुति किया करते हैं, तब सर्व शक्ति मान् शांतिदाता आनन्द स्वरूप मोक्ष दाता महान् ईश्वर की यदि भक्तगण स्तुति किया करते हैं तो इसमें नवीनता ही क्या है ?

भक्तः—हे भगवन् स्तुति का स्वरूप क्या है ? संसार में अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए दृष्टि आते हैं मेरे कल्याणार्थ जो निश्चय करके ठीक हो वही कहिये।

गुरुः—हे श्रेयोत्सुक प्रियवत्स, तैंने अति उत्तम प्रश्न किया है उसका उत्तर यह है कि मूर्ति पूजन, स्वाध्याय, जप, तप, शास्त्रों का वचन युक्ति पूर्वक कथन करना, या युक्ति प्रयुक्ति पूर्वक सुनना, फिर मनन करना, ईश्वर के नामों का कीर्तन करना, ईश्वर प्रणीधान, ईश्वर स्मरण, महात्माओं का सत्संग, पवित्रता, जगत के जीवों की सेवा करना, धारणा, ध्यान, समाधि, सांख्य योग, कर्म योग इत्यादि सब ही स्तुति हैं।

हे प्रिय दर्शन, इस प्रकार अपने हृदय पर "पहरा देना" और "स्तुति करना" भक्तों का मुख्य धर्म है और यह दुनियां के सब धर्मों का सत्य तत्व है, इन स्तुतियों में से जो तुमको अभिमत हो उसका अनुष्ठान कर सुख स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति कर। कहा भी है।

दो०:—सब घट मेरा साइयां, खाली घट नहिं कोय।
बलिहारी वा घट की, जा घट परगट होय॥

प्रिय पाठको मेरे प्राण प्यारे भक्तो अपने पवित्र अन्तः करण पर "पहरा दो" और ईश्वर की "स्तुति करो" ! महान ईश्वर की स्तुति करो !! स्तुति करो !!!

महात्माओं के वाक्य

१ स्वार्थ रहित होने का प्रयत्न करो और अपने गुरु की सेवा करो। सेवा में अपने आराम और सुविधा को भूल जाओ। जब सच्चे प्रेम का उदय होता है तो हम प्रेमी से कुछ पाने की इच्छा नहीं रखते बल्कि हम सब कुछ उस पर न्योछावर करने को तय्यार रहते हैं और ऐसा करने में आनन्द

मनाते हैं। प्रेम ही के लिए होना चाहिए। यह परतंत्रता नहीं है वरन् आनन्द पूर्वक स्वतंत्रता है।

२. गुरु का अहसान हम पर अनन्त है। हम न तो स्वयं उनकी यथार्थ सेवा ही कर सकते हैं और न उनके उद्देश में सहायता ही दे सकते हैं। अपने जीवन से उनको प्रसन्न करना हमारा सब से बड़ा कर्तव्य है। अपने किसी विचार, शब्द या कर्म्म से उनको अप्रसन्न करना हमारी सब से भारी बद क़िसमती है॥

३. अपने आपको पूर्ण रूप से गुरु के समर्पण कर दो फिर तुम अभय हो जाओगे। उनकी दया सदैव तुम्हारे साथ रहेगी और प्रत्येक भय और कम जोरी में वह तुम्हारी रक्षा करेगी।

४. सच्चे प्रेम से बढ़ कर संसार में कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है। प्रेम से सब कुछ साध्य है और असाध्य कुछ भी नहीं है। प्रेम जीवन है। और प्रेम का अभाव ही मृत्यु है। भक्ति की शक्ति आश्चर्य मय है। अपनी दृष्टि सदैव उद्देश पर लगाए रहो, ऐसा करने से तुम जीवन यात्रा प्रसन्नता और निर्विघ्नता से व्यतीत कर सकोगे। उद्देश रहित जीवन में सुख और शान्ति नहीं हो सकती।

५. बुद्धि का वास मनुष्य के दिमाग में है न कि उपाधियों और पुस्तकों में।

६. नम्रता और विनय ही वह सीढ़ियां हैं जिनके द्वारा मनुष्य धीरे २ ऊपर को चढ़ सकता है। मनुष्य को गिराने वाला अहंकार है न कि विनय।

७. बुराई के बदले बुराई करना बड़ा आसान है। यदि तुम में मनुष्यता है तो उस आदमी के साथ भलाई करो जिसने तुम्हारे साथ बुराई की है कि परमात्मा दयालु पुरुषों से प्यार करते हैं।

८. यद्यपि भेद कुछ भी नहीं है तब भी मैं तेरा हूं क्योंकि लहरें समुद्र से निकली हैं समुद्र लहरों से नहीं।

९. अमूल्य जीवन इन तुच्छ बातों में नष्ट कर दिया "मैं गरमी में क्या खाऊंगा और सर्दी में क्या पहनूंगा" अरे नीच पेट तू एक मधुकरी में क्या नहीं सन्तोष कर लेता ताकि तुझे गुलामी में अपनी गर्दन न झुकानी पड़े॥

१०. जब तक तेरे पास रुपया और ज़मीन है तब तक उनको अच्छे कामों में लगादे अन्यथा वह कभी दूसरों के पास चले जावेंगे।

११. दुःख वह पग डण्डी है जो हमको परमात्मा का अनुभव कराने में जल्दी से आगे लेजाती है। यह वह अन्धेरी गुफा है जिसमें से उन लोगों को अवश्य गुज़रना होगा जो अनन्त सुख, और सनातन ब्रह्म को प्राप्त करना चाहते हैं॥

१२. जो आदमी दूसरों को अच्छा बनाने का बहुत प्रयत्न करता है वह उनको बुरा बनाता है। मनुष्यों के सुधार का केवल एक ही ढंग है कि मनुष्य स्वयं अच्छा बन जाय और अपनी आंख के शहतीर और दूसरों की आंख के तिनके वाली कहावत को सदा याद रक्खे। दूसरों को उपदेश देने का समय तो कभी २ आता है और स्वयं अच्छा बनने का समय सदैव रहता है।

१३. बिना नतीजे के विचारे किसी काम का आरम्भ न करो।

१४. सहानुभूति का एक शब्द भी मनुष्य बहुत दिन तक याद रखता है।

१५. जिनका जीवन पवित्र है और जिनके विचार शुद्ध वे सदैव प्रसन्न रहते हैं। आध्यात्मिक जीवन की उन्नति की कसौटी प्रसन्नता है। जिस मनुष्य की आत्मा का विकाश हो चुका है वह सदैव आनन्दित रहता है। यदि हमारा आनन्द बढ़ रहा है तो हमको समझना चाहिए कि हमारी आध्यात्मिक

उन्नति हो रही है।

१६. पवित्रता, धैर्य्य और ध्यान का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए, लगातार अभ्यास स्वभाव बन जाता है।

१७. परमात्मा में अत्यन्त प्रेम का नाम भक्ति है। भक्ति के प्राप्त करने पर मनुष्य पूर्ण, अमर और सन्तुष्ट होजाता है, भक्ति की प्राप्ति के पश्चात् अन्य किसी प्रकार की इच्छा शेष नहीं रहती।

१८. भय अहंकार और ईर्षा द्वेष से रहित हो जाता है, भक्ति की प्राप्ति पर आत्मा ज्ञान से पूर्ण हो जाता है, वह शान्त स्वरूप बन जाता है और सिवाय परमात्मा के उसे और कुछ भी अच्छा नहीं लगता। जब जीव अपनी सब प्रकार की वासना, विचार और कर्मों का त्याग कर देता है और परमात्मा के एक क्षण भर के विस्मरण से भी उसे अत्यन्त कष्ट होता है तब उसमें भक्ति का उदय होना समझना चाहिए।

१९. एक अच्छी माता सैकड़ों अध्यापकों से अधिक प्रभाववाली होती है।

२०. स्त्रियें पुष्पों की भान्ति हैं। उनका स्वभाव कोमल होता है उनके साथ नरमी और सभ्यता से व्यवहार करना चाहिए॥

२१. यदि परमात्मा का साक्षात्कार करने में तुम अब तक असफल रहे हो तो अधिक अभ्यास करो। हिम्मत मत हारो। सन्तोष पूर्वक अभ्यास को आरम्भ रक्खो ठीक समय आने पर तुमको अवश्यमेव परमात्मा के दर्शन होंगे।

२२. मन की साधना संसार के समस्त ज्ञान से बढ़कर है।

२३. शराब से मनुष्य पशु ही नहीं बन जाता किन्तु पागल बन जाता है। यदि तुम शराब से प्रेम करोगे तो तुम्हारी स्त्री, तुम्हारे बालक और तुम्हारे मित्र तुम से घृणा करेंगे।

२४. चित्त की प्रसन्नता लाखों रुपये की आमदनी से बढ़कर है।

२५. परमात्मा न तो तेरी जाति को पूछेगा और न ही तेरे कुलको वह तो केवल यह पूछेगा कि तू ने पृथ्वी पर क्या २ काम किए हैं॥

किसको

(ले० श्री पं० बाबूलाल जी भार्गव)

किसकी रवि शशि औ तारागण खोजा करते हैं दिन रात!
किसका यश गया करते हैं द्विज-गण होते ही सुप्रभात?
किसको सुखद बनाने जाता सुमन-गंध के प्रात-बयार!
किसको जलधि उचककर लहरों से जतलाता है निजप्यार?
किसकी मंजुल मूर्ति देखने को नित तरसा करते नैन!
उस प्रियतम परमेश्वर की जो व्याप रहा है जग में ऐन?

तेजो विन्दु उपनिषद्

निदाघ्य नाम के मुनि ने ऋभु से पूछा हे भगवन्! आत्म अनात्म का विवेक कहिए।

वे ऋभु बोले:-ब्रह्म सब वाणियों की अवधि है, गुरु सब चिन्ताओं की अवधि है। आत्मा सब का कारण और कार्य है, परन्तु स्वयं कार्य और कारण से रहित है। वह सब संकल्प से रहित, सर्व नाद मय शिव है। सब से रहित चिन्मात्र है सर्व आनन्द मय है। पर है। सर्व तेज रूप प्रकाश रूप है। नाद आनन्द मय आत्मा है। सब अनुभवों से मुक्त, सब ध्यान से रहित है। सब नाद कलाओं से अतीत, अव्यय और आत्म अनात्म विवेक आदि भेद अभेद से रहित ऐसा वह आत्मा मैं हूं। शान्त अशान्त से

महात्माओं के वाक्य।

१. अपने पास सोना और चान्दी कुछ भी न रख जो कुछ तेरे पास है उसको बेचकर दान करदे।

❀ ❀ ❀ ❀

२. यदि तू परमात्मा को सर्वत्र नहीं देख सकता है तो किसी विशेष स्थान में उसे कभी नहीं पा सकेगा।

❀ ❀ ❀ ❀

३. परमात्मा की सच्ची पूजा परमात्मा के तुल्य होजाना है।

❀ ❀ ❀ ❀

४. विश्वास पर्वतों पर शासन कर सकता है परन्तु वह इच्छा नहीं करता।

❀ ❀ ❀ ❀

५. विश्वास हमारी वह इच्छा है जिससे हम परमात्मा को अपना पति बना लेते हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

६. श्रद्धा सब से बड़ी मूर्खता है परन्तु यह ऐसी मूर्खता है जो हमको परमात्मा से मिला देती है।

❀ ❀ ❀ ❀

७. महान् पुरुष की शिक्षा को उसके निकट रहने वाले ग्रहण नहीं किया करते। उनकी दृष्टि से उनकी शिक्षा इस प्रकार ओझल रहती है जिस प्रकार छोटी पहाड़ियों से पर्वत।

❀ ❀ ❀ ❀

८. समस्त मतों का सार यह है कि परमात्मा से मिलना चाहता है तो संसार को भूल जा।

❀ ❀ ❀ ❀

९. अपने आपको जान ले फिर तू समस्त विश्व को और देवताओं को जान जावेगा।

❀ ❀ ❀ ❀

१०. आत्मा में सब कुछ व्याप्त है जो जो अपनी आत्मा को जानता है वह सब कुछ जानता है और जो अपनी आत्मा से अनभिज्ञ है वह सब से अनभिज्ञ है। (सुकरात)

❀ ❀ ❀ ❀

११. परमात्मा का ज्ञान पुरुष के समान है और परमात्मा का प्रेम स्त्री के समान। ज्ञान द्वारा परमात्मा के वाह्य कलेवर में प्रवेश किया जा सकता है परन्तु उसके अन्तर्भेद में प्रविष्ट होने के लिये प्रेम की आवश्यकता है। (रामकृष्ण परम हंस)

❀ ❀ ❀ ❀

१२. बुरा विचार सब से भयानक चोर है। संसारी विचार और चिन्ताएं चित्त से निकाल दो। बुरे विचार मत रक्खो।

❀ ❀ ❀ ❀

१३. मन एक साफ और चमकदार शीशा है; हमारा कर्तव्य यह है कि इसे सदैव पवित्र रक्खें और इस पर कभी भी धूल न जमने दें।

❀ ❀ ❀ ❀

१४. जिस प्रकार सूर्य की तीक्ष्ण किरणें घोर अन्धेरे में प्रवेश करके उसे दूर कर देती हैं इसी प्रकार ध्यान द्वारा एकाग्र किए विचार अत्यन्त गहन रहस्य को प्राप्त कर लेते हैं।

❀ ❀ ❀ ❀

१५. अविनाशी परमात्मा के दर्शन चित्त के शान्त होने पर होते हैं। जब चित्त का समुद्र इच्छाओं से चंचल होता है तो उसमें परमात्मा का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता।

❀ ❀ ❀ ❀

१६. साधु महात्माओं का सत्संग आध्यात्मिक उन्नति का सब से बड़ा साधन है।

१७. जो ज्ञानी पुरुषों का संग करेगा वह ज्ञानी हो जावेगा।

१८. जो गुरु की आज्ञा हो वही करो, इससे उत्तम कुछ भी नहीं है। कोई गुरु की निन्दा करे या उन पर दोषारोपण करे तो उसे मत सुनो और उस स्थान को तुरन्त छोड़ दो।

१९. जो गुरु को मनुष्य मानते हैं वह उनके सम्बन्ध से कुछ लाभ नहीं उठा सकते।

२०. ज्ञान के प्राप्त करने का एक साधन है अपना अनुभव, परन्तु यह सब से कठिन है, दूसरा साधन है गुरु की दया, यह सब से आसान है, तीसरा साधन है समस्त बाह्य वस्तुओं का त्याग करके ध्यान परायण हो जाना यह सबसे उत्तम है (कनफ्यूशश)

२१. पुरुषार्थ करने के लिए कमर कसलो क्यों कि मार्ग तुमको स्वयं चलना होगा गुरु तो केवल मार्ग दिखाने वाला है।

२२. बुद्धिमान को चाहिए कि किसी के दबाव में न रह कर स्वतंत्रता पूर्वक काम करे।

२३. यह उत्तम बात है कि हम नेक हों और लोग हमको बुरा कहें परन्तु यह बुरी बात है कि हम बुरे हों और लोगों से नेक कहलाने का प्रयत्न करें। (शेख सादी)

२४. केवल वही मनुष्य साधु कहलाने योग्य है जिसने सांसारिक भलाई बुराई को जीत लिया है और सदैव ज्ञान के प्रकाश में रहता है (धम्मपद)

२५. मैं उनसे प्रेम करता हूं जो मुझको बहुत घृणा की दृष्टि से देखते हैं क्योंकि उनकी इच्छा से छूटे हुए तीर दूसरे किनारे पर जाकर पड़ते हैं।

२६. ओस की बून्दें कमल के बड़े पत्ते पर पड़ती हैं और थोड़ी देरी उसपर रह कर इधर, उधर ढलक कर समाप्त हो जाती हैं। यही दशा मनुष्य जीवन की है। (सोजो हेन जी)

२७. जिस मकान की छत मज़बूत होती है उसमें वर्षा का जल प्रवेश नहीं कर पाता इसी प्रकार ध्यान परायण चित्त में विषय वासनाओं का प्रवेश नहीं हो सकता (धम्मपद)

२८. उस साधक को पूर्ण समाधि में स्थित समझना चाहिये जो ध्यान की अवस्था में बाह्य वस्तुओं से इतना प्रथक् हो जावे कि पक्षी उसकी जटाओं में घोंसला बनाले और उसको पता न लगे। (राम कृष्ण)

२९. इस आत्मा की प्राप्ति सत्य, तप, पवित्रता और ज्ञान द्वारा हो सकती है। (उपनिषद्)

३०. साधक को चाहिये कि अपने सम्बन्ध में किसी प्रकार की बात चीत न करे, अहंकार और दर्प को चित्त से निकाल दे और सन्तोष, सहन शीलता और मौन के शस्त्रों से अपने को सुसज्जित करे ताकि व्यर्थ की वार्तालाप में उसका अमूल्य समय नष्ट न हो। (बहाउल्ला)

शीतोष्णादि द्वन्द्वों (दुःखों) से कोई बाधा नहीं होती यह आसन योग का फल है।

अपूर्ण

ईश-स्तुति।

[ले० श्री ला० गौरीशंकर गुप्त]

(१)

जय जय यदुनन्दन असुरनिकंदन, कंस विमर्दन पाहि विभो
हम शरण तुम्हारी, संकट भारी विनय हमारी सुनो प्रभो ॥
हे असुरारी नन्दक धारी, गोहितकारी कृपा करो।
जयपूर्ण नरोत्तम नित्य सनातन, भक्ति दानकर भीति हरो ॥

(२)

गीता गायक अर्जुन पालक, विश्वरूप दिखलाओ।
त्रिभुवन भर्ता सब जग कर्ता, हमें न तुम विसराओ ॥
नन्द के नन्दन दुष्ट निकन्दन, भक्ति योग सिखलाओ।
अभय दीजिये शरण लीजिये, प्रेम मार्ग बतलाओ ॥

(३)

कष्ट निवारण सुख के कारण, मानस कञ्ज खिलाओ।
भव भय हारी जग सुख कारी, हमको नित्य हंसाओ ॥
सम्पति दाता गुण-गण धाता, हमको भक्त बनाओ।
करुणा-वरुणा-लय जग शरणा, अपना नाम धराओ ॥

महात्माओं के वाक्य।

सब से बड़ा आदमी वह है जो सब से अधिक प्रेम का भण्डार है।

जिस प्रेम में शिकायत हो वह प्रेम नहीं है। प्रेम हानि लाभ को नहीं जानता, प्रेम जीवन का सार है।

अपने आप को भूल जाना ही परमात्मा बन जाना है।

अहंकारी पुरुष ही कहा करता है कि मैं प्रेम करता हूं।

अपने शत्रुओं से प्रेम करो फिर तुम्हारा कोई शत्रु नहीं रहेगा।

दुष्ट को ठीक करना उस पर परम दया करना है।

मनुष्य की परीक्षा लेना परमात्मा की परीक्षा लेना है।

परीक्षा करने में सदैव अन्याय करना पड़ता है।

अगर तुम परमात्मा को किसी विशेष स्थान में नहीं देख सकते तो उसका कारण यह है कि वह हर जगह मौजूद है।

परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ पूजा परमात्मा के तुल्य हो जाना है।

श्रद्धालू मानता है पर मांगता नहीं।

श्रद्धा का अर्थ यह है कि मनुष्य सब कुछ छोड़ने को तैयार रहे।

विश्वास सब से बड़ी गलती है परन्तु यह ऐसी बड़ी गलती है जो हमको उस परमात्मा से मिला देती है।

परमात्मा को कोई नाराज नहीं कर सकता। क्योंकि वह नाराज नहीं होता।

जितना मनुष्य क्षुद्र होता है उतना ही वह नाराज होता है।

यदि तुम सब लोगों को समझने की समता रखते हो तो तुम सब को क्षमा कर सकते हो।

जितनी अधिक कठिनाई होती है उतनी ही अधिक सफलता होती है।

जो गिरता है सो चढ़ता है।

जहां तुम गिर पड़ो वहां खोदो तुमको

खजाना मिलेगा।

भलाई हम उसे कहते हैं जिस से हम खुश होते हैं और बुराई हम उसे कहते हैं जिससे दूसरे खुश होते हैं।

जो बहुत दुष्ट होते हैं उनको अपनी दुष्टता का ज्ञान नहीं होता।

जहाँ प्रेम नहीं है वहीं नरक है। नरक वहीं है जहां 'मैं' है।

स्वर्ग वहां है जहाँ मैं और तू एक है।

जो अपने लिये सब से छोटा स्थान लेता है वही सब से बड़ा आदमी है।

सब से बड़ा बनना चाहते हो तो बालक की भान्ति सरल बनो।

यदि मनुष्य परमात्मा के दर्शन करेगा तो वह उसको बालक के रूप में दिखाई देगा।

तपस्वी आविसकरणी के वचनामृत

[ले॰ श्री कृष्णगोपाल जी माथुर]

(१)

भले ही तुम इस लोक के जैसी तो क्या, पर स्वर्गलोक के देवों जैसी ईश्वरोपसना क्यों न करो, परन्तु जब तक तुमको उस पर श्रद्धा नहीं होगी तब तक तुम्हारी उपासना मान्य होने की नहीं।

(२)

जिस मनुष्य का इन तीन वस्तुओं से प्रेम है, उस मनुष्य से नर्क ज्यादा दूर नहीं है। १–अच्छे २ भोजन, २–अच्छे २ वस्त्र और ३–श्रीमानों का सहवास।

(३)

जिसको ईश्वर का साक्षात्कार हुआ है, उससे कुछ भी अज्ञाना नहीं रहा। जिस ने परमात्मा को जान लिया है, उसने जानने योग्य सब ही कुछ जान लिया है।

(४)

बाहरी एकान्तता सच्ची एकान्तता नहीं है। मन में चिन्ता या शंका का प्रवेश न हो, यही सच्चे से सच्चा एकान्त है, और इसी एकान्त में जो रहते हैं वे ही सच्चे एकान्ती और संग रहित हैं। जब द्वैतभाव जाग्रत होता है, तभी शैतान ठग सकता है। हृदय को सदा हाथ में रखना चाहिये। यदि हृदय हाथ में होगा तो उसमें किसी को भी घुसने का रास्ता नहीं मिलेगा।

(५)

जिन्हें उच्चता प्राप्त करनी हो, वे विनयी बनें। जो पुरुषार्थ प्राप्त करना चाहें, वे सच्चे बनें। जिनको गौरव प्राप्त करना हो, वे ईश्वर से डरते रहें। जो महत्त्व प्राप्त करना चाहें, वे धैर्यवान् बनें। जिन्हें शान्ति प्राप्त करने की इच्छा हो, वे वैराग्यवान् होवें और जो सम्पत्ति प्राप्त करना चाहें, वे बड़ों का आश्रय लें। *

ज्ञान और भक्ति का तारतम्य।

गतांक से आगे।

[ले० श्री भक्तरत्न मथुराप्रसाद जी रिटायर्ड जज]

प्यारे सत्संगी भ्राताओ ! गत अंक में ज्ञान और भक्ति के महत्व का भेद एक उदाहरण द्वारा आपकी सेवा में निवेदन किया गया था। जैसे किसी छत्रपति नरेश के बनाये हुए अद्भुत नगर के

* "मुस्लिम महात्माओं से।"

लिए करता है। उसके काम रहस्य से पूर्ण हैं। इन विचारों के द्वारा तुम्हारी चिन्ताएं समूल नष्ट हो जावेंगी। सब चिन्ताएं परमात्मा पर जो कि माता के समान है छोड़कर निश्चिन्त हो जाओ। इससे अवश्य शान्ति प्राप्त होगी।

३१० जो भक्त १२ वर्ष तक निरन्तर श्रद्धा भक्ति पूर्वक भजन करता है उसको सब प्रकार की सिद्धिएं स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं। अष्ट प्रकार की सिद्धिएं भक्त की सेवा करने के लिये हाथ बान्धे खड़ी रहती हैं। परमात्मा भक्त को देह धारण करके दर्शन देते हैं।

३११ साधक को चाहिए कि जो भोजन वायु उत्पन्न करता है जैसे काला चना उनको खाना छोड़दे। जौ की रोटी साधक के लिए सबसे उत्तम है।

३१२ साधक को चाहिए कि केवल एक समय दो पहर को भोजन करे। रात्रि को आध सेर दूध और कुछ फल खा लेने चाहिएं। रातको बहुत हलका भोजन करना चाहिए। यदि निद्रा भंग होती है या भारीपन प्रतीत होता है तो शीघ्र उठ जाना चाहिए। साधन आरम्भ करने वालों के लिए भोजन को सावधानी रखना परमावश्यक है। अपने स्वभाव के अनुसार भोजन के पथ्यापथ्य नियम स्वयं ही बनाने चाहिएं। अपने चित्त का निरीक्षण करने में तुम ही स्वयं सब से अच्छे जज हो इसलिए अपनी भोजन सामग्री के सम्बन्ध में तुमको ही स्व निर्णय करना चाहिए।

महात्माओं के वाक्य

जो मधुर वचन बोलना और मित्रता करना नहीं जानते वे फूट का बीज बोते हैं और मित्रों को एक दूसरे से जुदा कर देते हैं।

जो लोग अपने मित्रों के दोषों की खुलेआम चर्चा करते हैं वे अपने दुश्मनों के दोषों को किस तरह क्षमा कर सकते हैं?

मुंह से कोई कितनी ही नेकी की बातें करे परन्तु उसकी चुगलखोर जबान उसके हृदय की नीचता को प्रगट कर ही देती है।

यदि किसी को अपने से प्रेम है तो उसे पाप की ओर जरा भी नहीं झुकना चाहिये।

यदि परोपकार करने के फलस्वरूप सर्वनाश उपस्थित हो, तो गुलामी में फंसने के लिये आत्म-विक्रय करके भी उसे सम्पादन करना चाहिये।

वही लोग जीते हैं जो निष्कलंक जीवन व्यतीत करते हैं और जिनका जीवन कीर्ति विहीन है, वास्तव में वे ही मुर्दे हैं।

जिस तरह इहलोक धन-वैभव से शून्य पुरुष के लिए नहीं है, ठीक इसी तरह परलोक उन लोगों के लिये नहीं, जिनके पास दया का अभाव है।

जो लोग तपस्या करते हैं वही तो वास्तव में अपना भला करते हैं। बाकी सब तो लालसा के जाल में फंसे हुए हैं और अपने को केवल हानि ही पहुंचाते हैं।

दुनिया जिसे बुरा कहती है अगर तुम उससे बचे हुए होतो फिर न तुम्हें जटा रखाने की जरूरत है, न सिर मुड़ाने की।

सचाई क्या है ? जिससे दूसरों को, किसी तरह का ज़रा भी नुक़सान न पहुंचे, उस बात को बोलना ही सचाई है।

मनुष्य की समस्त कामनाएं तुरन्त ही पूर्ण हो जाया करें यदि वह अपने मन से क्रोध को दूर करदे।

जो गुस्से के मारे आपे से बाहर है वह मुर्दे के समान है, मगर जिसने क्रोध त्याग दिया है वह सन्तों के समान है।

मैं और मेरे के जो भाव हैं, वे घमण्ड और खुदग़र्ज़ी के सिवाय और कुछ नहीं हैं। जो मनुष्य का दमन करलेता है वह देवलोक से भी उच्चलोक प्राप्त करता है।

इच्छा कभी तृप्त नहीं होती किन्तु यदि कोई मनुष्य उसको त्याग दे तो वह उसी दम सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेता है।

जीवन का कुछ उद्देश बनाओ, उद्देश रहित जीवन बिना पतवार की नौका के सदृश है। उद्देश को पूर्ण करने के लिए साधन सामग्री संग्रह करो फिर कार्य आरम्भ करदो।

कठिनाइयों से विचलित न हो, कठिनाइएं हमको दृढ़ बनाने के लिए हैं। उनका साहस से मुक़ाबला करो। कठिनाइएं उस झक्कड़ की भान्ति होता हैं जिसके पीछे अमृतरूपी वर्षा रहती है।

काम क्रोध और मोह ज्यों २ मनुष्य को छोड़ते जाते हैं दुःख भी उनका अनुसरण करके धीरे २ नष्ट होजाते हैं।

ज्ञान और सब तरह की चतुरता से क्या लाभ ? अन्दर जो आत्मा है उसका ही प्रभाव सर्वोपरि है।

दुनियाँ में दो चीज़ें एक दूसरे से बिलकुल नहीं मिलतीं धन-सम्पत्ति और साधुता व पवित्रता

धर्मात्मा लोगों की नसीहत एक मज़बूत लाठी की तरह है, क्योंकि जो उसके अनुसार काम करते हैं, उन्हें वह गिरने से बचाती है।

बुद्धिमान पुरुष सारी दुनियाँ के साथ मिलन सारीसे पेश आता है और उसका मिज़ाज़ हमेशा एकसा रहता है। उसकी मित्रता न तो बेहद बढ़ जाती है और न एकदम घट जाती है।

कञ्जूस और मक्खी चूस के बराबर कोई भी दुर्गुण नहीं है। कञ्जूस को भगवान की प्राप्ति असम्भव है।

यदि किसी को महापुरुषों की प्रीति और भक्ति मिल जाय तो वह सब से महान सौभाग्य की बात है।

बहुत लोगों को शत्रु बना लेना मूर्खता है किन्तु नेक लोगों की मित्रता को छोड़ना उससे भी बहुत बुरा है।

अच्छी सङ्गत से बढ़कर आदमी का सहायक कोई भी नहीं है। और कोई भी चीज़ इतनी हानि नहीं पहुंचाती जितनी बुरी सङ्गत।

जब समय तुम्हारे विरुद्ध हो तो सारस की तरह निष्कर्मण्यता का बहाना करो, लेकिन जब समय आवे तो सारस की तरह तेज़ी के साथ झपट कर हमला करो।

अनजाने मनुष्य पर विश्वास करना और जाने हुए योग्य पुरुष पर सन्देह करना यह दोनों ही बातें एक समान अनन्त आपत्तियों का कारण होती हैं

जैसे मकड़ी अपनी नाभि से जाला सूजती है और उसको समेट लेती है और जिस तरह पृथिवी से अन्नादि औषधियें उत्पन्न होता होती हैं और जैसे जीते पुरुष से केश और लोम उत्पन्न होते हैं। इसी तरह ब्रह्म से सृष्टि काल में संसार उत्पन्न होता है ॥ ७ ॥

सत्योपदेश

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

नित्य प्रति भजन गाना परमेश्वर के नाम का संकीर्तन करना ही सार है और सब असार है।

ध्यान करो, भजन करो, प्राणायाम करो, प्रार्थना के साथ साथ परमात्मा के ऊपर पूरा २ विश्वास करो। परमेश्वर हरेक वस्तु में विराजमान है, वह बड़ा दयालु, कृपालु है और सहायता करने वाला है। वह क्षमा स्वरूप सब की भूल चूक क्षमा करने वाला दयालु है। उसको नमस्कार, करो धन्यवाद दो। 'ओं तत्सत्' मंत्र को बोलकर खाओ पीओ जो कुछ काम करे उससे पहिले 'ओं तत्सत्' कह लिया करो। ज्योतिस्वरूप और प्रकाश स्वरूप परमात्मा का सुनहरी प्रकाश आंख मींचकर दशवें द्वार में त्रिकुटी में देखा करो वा उसकी भावना किया करो। परमात्मा अपने बाहर और भीतर सब जगह छाया हुआ है। उसके सिवाय कुछ नहीं ऐसी भावना किया करो। क्षण मात्र भी ऐसी भावना मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है।

ओं निरंजन ओंकार प्रभु सोहं सत्य नाम कर्तार।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूपनिराधार ॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ॥
एक आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्व का सार।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥
हरिनारायण अति ताप, देव देव मैं करहुं पुकार।
कृष्णानन्दा करहुं गौड़, हुं फट अल्ला सर्व पसार ॥
विनवों तुमको बारम्बार प्रीतम प्यार करो स्वीकार।
तड़तन गणपति नैन मझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार।

इस मंत्र रूप भजन को भी जब तब कहा करो। बहुत नींद आवे जब सोओ और बहुत भूख लगे तब खाओ और यह समझो कि यह सब कुछ भगवान् के लिये कर रहे हैं और उन्हीं की प्रेरणा से कर रहे हैं विद्या। पढ़ना परोपकार करना उत्तम कर्म है।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःखमाप्नुयात ॥

"बं बं बं महादेव सदाशिव" की ध्वनि किया करो। धन्य है उस परमात्मा को जिसकी महिमा और गुणों को पर्वत, सागर, आकाश, सूर्य, चन्द्र, तारे प्रकृति का परमाणु यशोगान रहे हैं।

भजन

संग्रह कर्ता पं० गौरी शंकर ब्रह्मचारी

हम नन्द नन्दन मोल लिये ॥ टेक ॥
यम की फांस काट मुकराये, अभय अजात किये ॥
सब कोऊ कहत गुलाम श्याम के सुनत सिरात हिये।
सूरदास प्रभु जू के चेरे, जूठन खाय जिये ॥

(शास्त्रार्थ) नहीं होना चाहिये। मन इच्छुकों को जाने दो।

६६४. परमात्मा से प्रार्थना करो और जाप करो। और यही तुम्हारे पक्षाघात या लेखक की ऐंठ की उत्तम औषध है। तुम नाड़ी तो शरीर और नाड़ी मन हो। तुम सदैव से ही पवित्र आत्मा हो। क्या अब भी विलाप के लिये स्थान है? आत्मा निर्माण या अनमाया (आरोग्य) है। सर्वदा अपने चित्त में यह विचार स्थिर रक्खो। इससे तुम्हारे में शक्ति आयगी। आंखें बन्द करलो और शक्ति को और स्वांस को आत्मा के रास्ते खींचो।

६६५. योग उसके लिये जो योग शास्त्र से परिमाणित भोजन, जो कि एक योगी को करना चाहिये, उससे अधिक भोजन करता है, सम्भव नहीं है। भोजन का परिमाण यह है कि आधा पेट तो भोजन और चौथाई पेट पानी और चौथाई वायु की स्वतन्त्र गति के लिये छोड़े। यह योग शास्त्र में मिताहार कहा जाता है। भोजन का संयम और नियम नवपरमत ग्राहों को अत्यन्त आवश्यक है। उड़ाऊ चटोरा या पेटू से योग बहुत दूर है।

६६६. योग जिज्ञासु जो इस जन्म में योग में असफल रहा वह अपनी आधुनिक उपस्थित दशा से नीचे नहीं गिरेगा। वह योग भ्रष्ट कहा जायगा। वह योग संस्कार के कारण दूसरे जन्म में द्विगुन उत्साह और पौरुष से 'योगरूढ़ दशा में पहुंचने का प्रयत्न करेगा जिस दशा में मनुष्य अपने निजानन्द स्वरूप में स्थित हो जाता है। वह अपने आत्मिक आनन्द में ही मग्न हो जाता है।

६६७. प्रकृति ही संस्कार पूर्व जन्म के अपने किये हुए पाप और पुन्य कर्म) हैं जो इस जीवन के प्रारम्भ में ही प्रकट होते हैं। जब यह प्रकृति अपनी शान्त या अदृश्य अवस्था में रहती है अव्यक्त कहते हैं प्रकृति में एक स्पन्दन (कंप कंपी) उत्पन्न होता है और तीनों गुण, सत, रज, तम प्रकट होते हैं। और तब यह संसार व्यक्त अर्थात् आरम्भ होता है।

महात्माओं के वचन

मनुष्य का विश्वास करो और यह बात उस पर प्रगट भी कर दो कि हम तुम्हारा विश्वास करते हैं परन्तु यदि तुम उस पर सन्देह करोगे तो वह अपने स्वभाव के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करेंगे।

बुद्धिमान पुरुष महान कामों का आरम्भ करते हैं परन्तु उन कामों को पूर्ण पुरुषार्थी करते हैं।

किसी मनुष्य की सब से उत्तम सहायता उसमें आत्म विश्वास उत्पन्न करना है।

मनुष्य धन से धनवान नहीं होता वरन आवश्यकताओं के कम करने से धनी होता है। एक बार महात्मा सुकरात के पास से कोई मनुष्य बहुत से रत्न लेजा रहा था उस समय सुकरात ने कहा "मैं बहुत ही आनन्द में हूं कारण मैं बहुत पदार्थों की इच्छा नहीं रखता"।

जो मनुष्य संशय वादी है वह एक पहरे दार की भान्ति जीवन व्यतीत करता है जो कभी चिन्ता से रहित नहीं रहता।

यदि तुम पर आपत्ति आजावे तो भी हंसते रहो और प्रयत्न करते रहो भगवान सब काम में सहायक होंगे।

यदि तुमने कोई भूल कर दी है तो उसके स्वीकार करने से कभी मत डरो, प्रत्येक मनुष्य

गलती करता है, संसार में पूर्ण कोई नहीं है। गलती करना लज्जा की बात नहीं है लज्जा की बात है गलती को न मानना।

जो आदमी बहुत काम करने वाला है उसके पास अपने काम की बड़ाई करने के लिए अवकाश ही नहीं है।

कोई भी मनुष्य अपने ज्ञान के अनुसार कर्म नहीं कर सकता क्योंकि ज्ञान कर्म से सदैव आगे रहता है।

कोई ऐसा काम अपने हाथ में लो जिसके करने में तुम्हारा चित्त तल्लीन हो जावे, प्रसन्न रहने वाले मित्रों का समूह बनाओ, खूब खिल खिलाकर हंसो। यह सब से उत्तम औषधि है॥

कोई पाप कर्म ऐसा नहीं है जो बिना फल दिए रह जावे, चाहे पाप का फल देर में भोगना पड़े परन्तु भोगना अवश्य पड़ेगा।

संसारी बड़े आदमी के संग में रहने से मनुष्य को बड़ा भारी त्याग करना पड़ता है। उसके साथ में हमको अपने व्यक्तित्व और स्वतन्त्र बुद्धि तक को स्वाहा करना पड़ता है।

जीवन में सफलता केवल योग्यता पर निर्भर नहीं रहती है, यह बहुधा साहस, चतुराई और सामग्री की प्राप्ति पर निर्भर रहती है।

प्रत्येक मनुष्य अपनी मूर्खता को छुपाना चाहता है परन्तु कोई भी ऐसा करने में समर्थ नहीं हो सकता।

सदैव साहस और सहानुभूति से परिपूर्ण और उद्यत रहना चाहिए। बड़ी आयु में विचार नवीन और सुन्दर बन जाते हैं।

उपदेश

अब ओंकार मंगल स्वरूप हो, सच्चित आनन्द स्वरूप परमात्मा सब को शान्ति और भक्ति, मुक्ति प्रदान करे। सत्पथ पर आरूढ़ होना और दृढ़ता की तलवार हाथ में लेकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारादि शत्रुओं को मृत्यु के घाट उतार देने के लिये अपने जीवन को समझना चाहिए और नित्य प्रति प्राणायाम व व्यायाम करना चाहिये।

प्रातःकाल और सायंकाल यह हिसाब लगाना चाहिए कि कौनसा काम हमने दिन भर में स्वार्थ के लिए किया। प्रत्येक काम परमात्मा की प्रसन्नता के लिए करना चाहिए।

जल बिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतु सर्व विद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥

सब विश्व को परमात्मा का स्वरूप समझ कर उसका रचयिता अन्तरात्मा, सत्ता स्फूर्ति देने वाला परमात्मा है उसको नमस्कार करना चाहिए।

किसी स्थान पर पद्मासन या किसी प्रकार से सीधे बैठ कर शान्ति से प्राणों को बाहर निकालना चाहिए और यह खयाल करना चाहिए कि प्राणों रूपी पुष्पाञ्जली परमात्मा को समर्पण कर रहे हैं। जब प्राण बाहर न ठैर सकें, बेचैनी और घबराहट करें तो उसको छाती फुलाकर शरीर में और सब नसों में जोर से भरना चाहिए और ओ३म् का गुप्त जप करना चाहिए जब भीतर प्राण बल दिखाने लगे तो लम्बा श्वास लेकर बाहर निकाल देना चाहिए।

छाती में श्वासों को भर कर लम्बा श्वास लेकर बाहर निकालना चाहिए। श्वास को भीतर घोटने का नाम प्राणायाम है।

आत्मा का प्रेम स्वरूप है इसलिए सब से प्रेम बढ़ाना चाहिए। किसी से लड़ना झगड़ना नहीं चाहिए शान्ति से रहना चाहिए जो अपना

बुरा चाहे उसका भी भला चाहना चाहिए। सब प्यासों को पानी पिलाना चाहिए और भूखों को भोजन देना चाहिए। सब को ध्यान करना चाहिए और परमात्मा के नाम का जप करना चाहिए और कानों से परमेश्वर के चरित्रों की कथा सुननी चाहिए। सब से ऐसी मीठी वाणी बोलनी चाहिए। मानों हमदर्दी व प्रेम का मेह बरस रहा हो, भगवान् पर वाणी रूपी पुष्प चढ़ रहे हों।

सब आदमी भगवान की खूब भक्ति किया करें 'नारायण हरि ओ३म् नारायण हरि ओ३म्' इस मंत्र का जप किया करें। सब को अपना आत्मा समझ कर सब के साथ प्रेम का बर्ताव करना चाहिए। खूब प्रेम से ठण्डा और मधुर पानी पिलाना चाहिए और यह भावना करनी चाहिए कि "यह पानी इनके शरीर में पहुंच कर रक्त के कण २ में भक्ति और भगवान् का नाम पैदा करदे, सुख और शान्ति भरदे। सब अपने आत्मा ही दीखने लग जाय, सब से सब को प्रेम हो। आनन्द ही आनन्द छा जाय, परमात्मा ही परमात्मा नज़र आजाय। उसके सिवाय यह जो कुछ दीख रहा है, भास हो रहा है, वह कुछ भी नहीं है। यह परमात्मा ही का रूप नाना प्रकार का जगत् होय भास रहा है। जैसे रज्जु सांप का रूप होय भास रही है। वास्तव में वह रज्जू ही है। ऐसे ही यह परमेश्वर का रूप ही है और कुछ नहीं। हरएक वस्तु बनावट की प्रतीत हो रही है और कुछ नहीं। इस का बनाने वाला अदृश्य है वह परमेश्वर परमात्मा है, सब का आत्मा है, वह ज्योति है जिसके द्वारा सब देखते हैं, खाते हैं, पीते हैं, उठते, बैठते हैं, सर्ग में उत्पन्न हो कर प्रलय में उसी में लय हो जाते हैं। वही एक परमात्मा सब का उपास्य देव है। उसको सब नमस्कार करो, वह सब का भला करेगा। ऐसा कर्म्म करो जिसके द्वारा परमात्मा प्राप्त हो। गौओं की सेवा, वृक्षों का पालन, परमेश्वर का भजन, सब कर्म्म परमात्मा के अर्पण करना चाहिए। हिन्दु, मुसलमान, ईसाई इत्यादि सब भगवान् के पुत्र हैं, सब का पिता एक परमात्मा है। सब को भाई २ के नाते से देखना चाहिए। हम सब के हैं और सब हमारे हैं हम सब परमात्मा का अंश हैं, उससे उत्पन्न हुए हैं और उसी में लय हो जावेंगे। वास्तव में वही सब कुछ है उसको नमस्कार हो, धन्यवाद हो, सब कुछ उसके लिए हो। अपना आप भी वही वह है। उसके सिवाय कोई नहीं। जैसे मिट्टी के खिलौना बरतन सब कुछ मिट्टी ही है ऐसे सब हिन्दु मुसलमान इत्यादि सारा ब्रह्माण्ड उसी का रूप है। उस का रूप है। उसको नमस्कार हो, रोम रोम से और रक्त के कण २ से उसका धन्यवाद हो। सारे जगत् का परमाणु उसका धन्यवाद कर रहा है, प्रणाम कर रहा। वह हमारा अपना आप है, उसके सिवाय न कोई माई है न बाप है।

भजन

टूटी गांठन तार गोपाला ॥ टेक ॥
सकल की चिन्ता जिस मन माँहि।
तिसके वृथा कोई नाहीं ॥ १ ॥
रे मन मेरे सदा हरि जप।
अविनाशी प्रभु आपहि आप ॥ २ ॥
आपन कीया कछु नहिं होय।
जैसा प्राणी सोचे कोय ॥ ३ ॥
तिस बिन तेरे कहिं कछु काम।
गति नानक जप एक हरि नाम ॥ ४ ॥

इस त्रिकाली संसार के अनियंत्रित प्रवाह में विद्यमान हैं जिनकी महिमा तुच्छ लेखनी द्वारा अशक्य है भाव भाषा मौन एवं शून्य हैं उनकी हृदयोद्गारावली का गान समस्त चराचार प्राणियों में ध्वनित है उनकी महद् शक्ति से ही यह समस्त संसार प्रवर्त है।

भक्त–विनोद

सूजैंगे कृपान समसान विषधर चलि, दलिमलि दुष्ट दैत्य दानव दबावैंगो ।
काटैंगो कराल काल की कुचाल कोर कोर, तोरि तोरि तदबीर ताकि मैं भगावैंगो ॥
काहे जिय सोचत 'सुरेन्द्र' बारि मोचि मोचि, दीनानाथ राम पीर तेरी दौरि आवैंगो,
भागैगी सकल चतुराई चित चंचल की, जब चक्रधार चक्रपति लै चलावैंगो ॥

* * * *

धारैंगो नवीन रूप घनश्याम घनश्याम, मारैंगो मलीन मन मोहिते जु मानी को ।
खेलैंगो खलगीर जब खलन खलगीर बीच, मचैंगी पुकारि त्राहि त्राहि तेग तानी को ॥
मेलैंगो विमर्दि गर्दि बैरिन अजानु बाहु, राखैंगो 'सुरेन्द्र' तिन बीच [तोहिं सानी को ?
देवैंगो अनाथलम्ब अवलम्ब जग जीव, लेवैंगो सरन रामचन्द ऐसो दानी को ?

सन्तो के वचन

असफलता बहुधा इस कारण होती है कि हम दूसरों से यह आशा रखते हैं कि पहले यह काम करें।

प्रतिभा और बुद्धि एकान्त सेवन से बढ़ती है परन्तु सदाचार संसार के संघर्ष में दृढ होता है।

अपने विचारों की पूर्णतया रक्षा करो, विचार आकाश में भी सुनने में आते हैं।

अधिक ज्ञान से बिलकुल अज्ञान अच्छा है। अधिक ज्ञान से दिमाग़ में वहम होजाता है।

जो मनुष्य अपने अज्ञान (भूल) को स्वीकार

करता है वही ज्ञानी है।

अपनी वाणी को वश में रक्खो ऐसा न हो कि तुमको अपने शब्दों पर पछताना पड़े।

समाज में मिलने से हमारे अहंकार का नाश होता है, अपनेसे श्रेष्ठ पुरुषों से मिलने पर अपने लघुत्व का ज्ञान होता है।

मनुष्य की दिमागी शक्ति के उन्नत होने का एक उपाय चित्त की एकाग्रता है। इसका प्रयोजन एक समय में एक ही काम करना और वह सहृदयता से करना।

जो कुछ संसार से हमारी इच्छा के विरुद्ध होता है वह भगवान् की मरज़ी से होता है।

कोई काम आधे मन से न करो, यदि कार्य उत्तम है तो उत्साह पूर्वक करो, यदि निकृष्ट है तो उसको सर्वथा त्याग दो।

उदार मनुष्य किसी पदार्थ को स्वयं भोग कर प्रसन्न नहीं होता वह तो दूसरों को खिलाकर आनन्दित होता है।

यदि तुम्हारा शत्रु भूखा है तो उसे खिलाओ, यदि प्यासा है तो पिलाओ, ऐसा करने से तुम उसके शिर पर अग्नि का ढेर रखते हो।

जो काम तुमको पसन्द है, उसे स्वयं करो, दूसरों से कराने की इच्छा मत रक्खो, करने में आनन्द है और नहीं करने में दुःख है।

कुछ लोगों का मत है कि ज्ञान द्वारा ही हम प्रेम की तरफ अग्रसर होते हैं, और कुछ का यह मत है कि ज्ञान और प्रेम एक दूसरे पर निर्भर हैं।

प्रेम अन्य साधनों की अपेक्षा आसान साधन है। प्रेम प्रत्यक्ष प्रमाण है, इसको किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। प्रेम का रूप शान्ति और आनन्द है।

प्रेम, ज्ञान से बढ़कर है। प्रेम से सब कुछ समाप्त होजाता है। समस्त ज्ञान का आधार प्रेम ही है। शुद्ध ज्ञान और शुद्ध प्रेम में कुछ भी अन्तर नहीं है।

ज्ञान पुरुष का स्वरूप है और प्रेम स्त्री का स्वरूप है। पुरुष बाह्य मकान में प्रवेश कर सकता है परन्तु स्त्री का अधिकार महलों के अन्दर भी है। परमात्मा प्रेम से ही प्राप्त होता है।

बड़ी २ बातें करने से कोई आदमी पवित्र और सदाचारी नहीं होता, निर्मल जीवन ही मनुष्य को भगवान् का प्यारा बनाता है।

भगवान् के प्रेम और सेवा के अतिरिक्त संसार की अन्य सब वस्तुएं मिथ्या हैं और उन पर गर्व करना अहंकार है

यश की इच्छा और ऊंची पद-मर्यादा का लोभ भी छुद्रा है और अहंकार प्रगट करता है।

दीर्घ जीवन की कामना करना और अच्छे एवं पवित्र जीवन से उदास रहना मूर्खता और अहंकार है।

वर्तमान जीवन पर ध्यान देना और जो कुछ आगे आने वाला है, उसकी परवा न करना भी मनुष्य का मिथ्या अहंकार है।

जो लोग अपनी कामनाओं के पीछे दौड़ते हैं, अपने अन्तःकरण को मैला और धुंधला कर लेते हैं वे ईश्वरीय विभूति से हाथ धो बैठते हैं।